सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 214, नई दिल्ली । रविवार, 13 अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 दशहरा पर राष्ट्रपति मुर्मु और PM मोदी ने किया रावण दहन
06 सोशल मीडिया के कारण रिश्तों में आ रही दरार
08 संस्कारशाला: रावण के दस सिर की मान्यता

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण पर लगेगी लगाम!

जल्द लागू होने वाला GRAP; पढ़ें किन चीजों पर रहेगा बैन

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए प्रदूषण गहराने से पहले ही ग्रेप (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) लागू कर दिया जाएगा। यानी वायु गुणवत्ता खराब या बहुत खराब स्तर पर पहुंचने के संकेत मिलने पर वास्तव में स्थिति खराब और बहुत खराब होने से पहले ही एडवांस में ग्रेप लागू किया जाएगा ताकि प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके।

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए प्रदूषण गहराने से पहले ही ग्रेप (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) लागू कर दिया जाएगा। यानी वायु गुणवत्ता खराब या बहुत खराब स्तर पर पहुंचने के संकेत मिलने पर वास्तव में स्थिति खराब और बहुत खराब होने से पहले ही एडवांस में ग्रेप लागू किया जाएगा ताकि प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने सितंबर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान पर विचार के बाद यह निर्णय लिया। आयोग ने यह बात सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई रिपोर्ट में कही है। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए वैसे तो 2017 से ग्रेप लागू है। ग्रेप में वायु गुणवत्ता खराब होने की स्थिति को देखते हुए कुछ नियंत्रण लागू किये जाते हैं जैसे जैसे स्थिति बिगड़ती है नियंत्रण और कड़े हो जाते हैं।

201 से 300 के बीच होता है ग्रेप तो उसे क्या कहते?

ग्रेप के चार स्तर हैं, खराब, बहुत खराब, गंभीर और अति गंभीर। जब दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) 201 से 300 के बीच होता है तो उसे खराब माना जाता है और तब ग्रेप वन के नियंत्रण लागू होते हैं जैसे प्रदूषण फैलाने वाली औद्योगिक इकाइयों और थर्मल पावर प्लांटों पर नियंत्रण, होटल रेस्त्रां और खुले भोजनालयों में तंदूर में कोयला और लकड़ी जलाने पर रोक, निर्माण और विध्वंस परियोजनाओं में धूल शमन के दिशा निर्देशों का पालन करना, कचरे का ठोस पर्यावरणीय प्रबंधन आदि।

निर्माण और तोड़फोड़ पर रहता प्रतिबंध

एक्यूआई 301 से 400 के बीच रहता है तो उसे बहुत खराब माना जाता है और ग्रेप का दूसरा चरण लागू होता है जिसमें पार्किंग शुल्क बढ़ाना, सीएनजी व इलेक्ट्रिक बस व मैट्रो की सेवाएं बढ़ाना शामिल है। एक्यूआइ के 401 से 450 रहने को गंभीर माना जाता है और ग्रेप का तीसरा चरण लागू होता है जिसमें दिल्ली एनसीआर में पेट्रोल की बीएस 3 कारो और डीजल की बीएस 4 कारों पर रोक लग जाती है।

एक्यूआई के 450 से ऊपर रहने को अति गंभीर माना जाता है और ऐसा होने पर ग्रेप का चौथा चरण लागू होता है जिसमें दिल्ली में ट्रकों के प्रवेश पर रोक, सिर्फ जरूरी सामान की आपूर्ति वाले सीएनजी वाहनों को प्रवेश मिलता है। दिल्ली में डीजल के हल्के और भारी मालवाहकों पर प्रतिबंध रहता है। आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में एक अक्टूबर को दाखिल रिपोर्ट में कहा है कि वायु प्रदूषण को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के लिए गेप पर विचार हुआ और इसे रिपाइज किया गया है।

कब लागू होगा ग्रेप?

ग्रेप को वायु प्रदूषण बढ़ने के मौसम विभाग (आइएमडी) और आइआइटीएम की भविष्यवाणी और अन्य संकेतों को देखते हुए पहले से लागू करने का निर्णय लिया गया है। अब सिस्टम ज्यादा सटीक हो गया है और पहले से ही मौसम और वायु गुणवत्ता की स्थिति के सटीक संकेत मिल जाते हैं ऐसे में स्थिति खराब होने के संकेत मिलते ही ग्रेप लागू किया जाएगा। आयोग ने एडवांस एक्शन प्लान तैयार करने और ग्रेप में जरूरी निर्देश जारी करने के लिए एक सब कमेटी भी गठित की है।

फ्लाईओवर से जा रही थी ब्रेजा, सामने से आई ट्रक ने मारी टक्कर, दरवाजे से निकल भी नहीं पाई लाशें

परिवहन विशेष न्यूज

पानीपत: भारत सरकार देश की सड़कों का चौड़ीकरण करने में लगी हुई है. हर सरकार की कोशिश होती है कि यहां की सड़कें बेहतरीन हों. इनकी कनेक्टिविटी हर जगह से हो जाए. लोग जब एक से दूसरी जगह ट्रेवल करें तो चौड़ी सड़कों की वजह से उन्हें आने-जाने में आसानी हो. सरकार सड़कों की हालत सुधारने में लगी हुई है. वहीं इसके साथ ही ये सड़कें जानलेवा भी बनती जा रही है.

हर दिन इन सड़कों पर खून का छिड़काव होता है. यानी ये सड़कें हर दिन किसी ना किसी की जान ले लेती है. लोगों के लिए काल बनती जा रही सड़कों में हाईवे की सड़कें भी शामिल है. आज पानीपत में एक भीषण सड़क हादसा हुआ. इस हादसे में कार में सवार चार लोगों की मौत हो गई. हादसा पानीपत फ्लाईओवर पर हुआ. कुंडली से पानीपत जा रहे युवक ब्रेजा कार में थे. ट्रक से हुई टक्कर के बाद चार युवकों की मौत हो गई.

पेमेंट लेने आए थे युवक

जानकारी के मुताबिक़, कार में पांच लोग सवार थे. सभी ब्रेजा से कुंडली से निकले थे. वो पानीपत जा रहे थे. युवक टूर एन्ड ट्रेवल्स का काम करते थे. कुंडली से पानीपत के लिए सभी पेमेंट के लिए निकले थे. इस दौरान पानीपत फ्लाईओवर कार की टक्कर सामने से आ रही ट्रक से हो गई. टक्कर में मौके पर ही चार युवकों की मैट हो गई. मरने वालों की पहचान कुंडली से रोहित नितिन, अक्षय

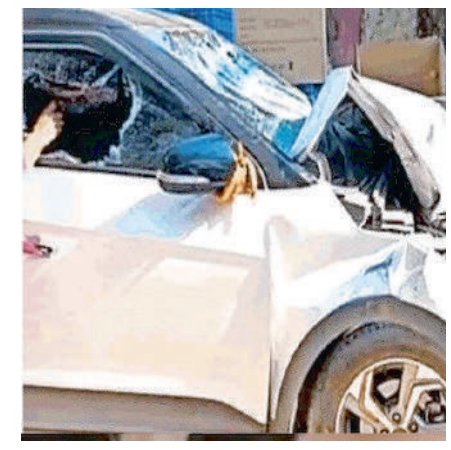

और जाटी गांव से राहुल के तौर पर हुई. इसमें रोहित और राहुल चचेरे भाई थे.

गाड़ी का निकला कचूमर

टक्कर इतनी जोरदार थी कि ब्रेजा की हालत खराब हो गई. कार बुरी तरह कुचल गई थी. गाड़ी की स्थिति ऐसी थी कि कार के दरवाजे नहीं खुल पाए. इसके बाद सभी शवों को खिड़की के शीशे तोड़कर निकालना पड़ा. साथ ही अंदर मौजूद सौरव, जिसकी स्थिति काफी गंभीर है, उसे पार्क हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया. सभी की उम्र बीस से पच्चीस के बीच की बताई जा रही है. बता दें कि कैथल में भी एक सड़क दुर्घटना हुई, जिसमें सात जानें गई थी.

दिल्ली के बस अड्डों पर बसों का नया बंटवारा, अब ट्रेनों की तरह ही किया जाएगा ऑपरेट

दिल्ली में ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट की प्राइवेट बसें अब उनके गंतव्य राज्यों के आधार पर विभिन्न बस अड्डों से ऑपरेट होंगी। यूपी, बिहार, उत्तराखंड और झारखंड जाने वाली बसें आनंद विहार बस अड्डे से चलेंगी। राजस्थान और मध्य प्रदेश जाने वाली बसें सराय काले खां से चलेंगी।

नई दिल्ली: दिल्ली के तीनों प्रमुख बस अड्डों पर बसों के रुकने की अधिकतम समय सीमा निर्धारित करने और उससे ज्यादा देर रुकने पर एक्स्ट्रा फीस लेने का आदेश लागू होने के बाद परिवहन विभाग एक और सुधारात्मक कदम उठाने जा रहा है। दिल्ली से चलने वाली ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट की प्राइवेट बसें सवारियां लेकर आगे किस राज्य में जा रही हैं, इस आधार पर यह तय होगा कि वो बसें दिल्ली के किस बस अड्डे से ऑपरेट होंगी। इसके लिए ट्रांसपोर्ट विभाग अगले हफ्ते तक नए दिशानिर्देश जारी करने जा रहा है।

कश्मीरी गेट बस अड्डे पर बढ़ गया था काफी दबाव

परिवहन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि जबसे दिल्ली में बस अड्डों से इतर रास्ते में अन्य जगहों से सवारियां पिक करने पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी गई है और नियम तोड़ने वाली प्राइवेट बसों को जब्त किया जा रहा है, तबसे कश्मीरी गेट बस अड्डे पर बसों का दबाव काफी बढ़ गया है। यह देखने में आ रहा है कि ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट वाली ज्यादातर बसें कश्मीरी गेट बस अड्डे से ही चल रही हैं। इसके चलते बस अड्डे में कंजेशन बढ़ रहा है और पीक टाइम में यहां आ रही बसों को बस वे मिलने में ज्यादा समय लग रहा है, जिसके चलते बस ऑपरेटरों को अतिरिक्त चार्ज देना पड़ रहा है और उनके हजारों रुपये स्टैंड फीस देने में खर्च हो रहे हैं। दिल्ली इंटरस्टेट बस ऑपरेटर्स संघ ने पिछले महीने एलजी को पत्र लिखकर इस बारे में शिकायत भी की थी कि बस अड्डे पर वेटिंग टाइम बढ़ गया है, जिसकी वजह से उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

करीब 600 प्राइवेट बसों की तादाद

अधिकारियों के मुताबिक, देखने में आया है कि पहले कश्मीरी गेट बस अड्डे से प्रतिदिन करीब 100-150 प्राइवेट बसें ही चला करती थीं, लेकिन अब उनकी संख्या बढ़कर 600 के आस-पास हो गई है। इसके उलट आनंद विहार और सराय काले खां बस अड्डे पर स्थिति पहले के समान ही है और वहां बसों की तादाद में कोई खास इजाफा नहीं हुआ है। कश्मीरी गेट पर बसों का दबाव बढ़ने की वजह से सारा सिस्टम अनियंत्रित हो गया है और स्थिति सुधरने के बजाय खराब होती जा रही है। इसे देखते हुए परिवहन विभाग जल्द नए डायरेक्शंस जारी करने जा रहा है, जिसके तहत बसों के डेस्टिनेशन के आधार पर उनका डिस्ट्रिब्यूशन अलग-अलग बस अड्डों पर किया जाएगा।

अब आनंद विहार बस अड्डे से किया जाएगा ऑपरेट

अधिकारिक सूत्रों से पता चला है कि यूपी, बिहार, उत्तराखंड और झारखंड जाने के लिए ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट की सभी बसों को जल्द ही आनंद विहार बस अड्डे से ऑपरेट किया जाएगा। वहीं, राजस्थान और मध्य प्रदेश की तरफ जाने वाली बसों को सराय काले खां बस अड्डे से चलाया जाएगा। कश्मीरी गेट बस अड्डे से केवल उन्हीं प्राइवेट बसों को ऑपरेट करने की इजाजत दी जाएगी, जो हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर जाएंगी।

ट्रेनों की तरह किया जाएगा बसों को ऑपरेटअधिकारियों का कहना है कि जिस तरह रेलवे ने अलग-अलग राज्यों में जाने वाली ट्रेनों को अलग-अलग रेलवे स्टेशनों पर डिस्ट्रिब्यूट किया हुआ है, उसी तरह से बसों का डिस्ट्रिब्यूशन होने से तीनों बस अड्डों की जगह का अधिकतम उपयोग हो सकेगा और कश्मीरी गेट बस अड्डे पर दबाव कम होगा। इससे यात्रियों में भी कन्फ्यूजन दूर होगा और उन्हें पता रहेगा कि किस जगह जाने के लिए बस कहां से मिलेगी। शहर के अंदर कम बसें आएंगी, जिससे ट्रैफिक कंजेशन और प्रदूषण भी कम होगा। बस यात्रियों को इस बारे में जागरूक करने के लिए पब्लिक नोटिस निकाला जाएगा और बस अड्डों पर अनाउंसमेंट की व्यवस्था भी की जाएगी।

यूपी: प्रदेश के इन 43 जिलों में हुई हैं सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं, तीन साल में हुए 124009 सड़क हादसे

यूपी के उन 43 जिलों की शासन को रिपोर्ट भेजी गई है जहां पर सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं हुई हैं। इन जिलों में सालाना औसतन आठ सौ से अधिक लोगों की मौत हुई हैं।

लखनऊ। प्रदेश के 43 जिलों में सर्वाधिक सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं। इन जिलों में सालाना औसतन आठ सौ से अधिक लोगों की मौत हुई है। दरअसल, तीन साल के जारी आंकड़ों के मुताबिक कुल 1,24,009 हादसे हुए, जिसमें 67,474 मौतें हुई हैं।

अपर परिवहन आयुक्त (प्रशासन) चित्रलेखा सिंह ने शासन को 43 जिलों की रिपोर्ट भेजी है, जहां पिछले तीन वर्षों में सर्वाधिक सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं। पिछले तीन वर्षों के 1,24,009 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं, जो औसतन 41,336 प्रतिवर्ष हैं। जबकि तीन वर्ष की सड़क दुर्घटनाओं के औसत के आधार पर मृतकों की संख्या का आकलन किया जाए तो यह 67,474 है। इसमें 43 जिलों में मरने वालों की संख्या औसत 800 से अधिक है।

इनमें कानपुर नगर, प्रयागराज, बुलंदशहर, आगरा, हरदोई, लखनऊ, उन्नाव, मथुरा, अलीगढ़, बरेली, गोरखपुर, सीतापुर, फतेहपुर, गौतमबुद्धनगर, बाराबंकी, कुशीनगर, फिरोजाबाद, जौनपुर, शाहजहांपुर, गाजियाबाद, आजमगढ़, मेरठ, मैनपुरी, बदायूं, बिजनौर, रायबरेली, कानपुर देहात, सहारनपुर, प्रतापगढ़, मुजफ्फरनगर, बहराइच, इटावा, अयोध्या, खीरी, मुरादाबाद, सोनभद्र, वाराणसी, एटा, बस्ती, मिर्जापुर, महाराजगंज, गोंडा और झांसी शामिल हैं।

अधिकारियों ने बताया कि सड़क हादसे घटाने के लिए 75 जिलों में एआरटीओ रोड सेफ्टी तैनात किए जा रहे हैं। हाल ही में 50 पदों पर मुहर भी लग गई है। पहले चरण में उन 43 जिलों में एआरटीओ रोड सेफ्टी की तैनाती की तैयारी शुरू हो गई है, जहां सर्वाधिक सड़क हादसे हुए हैं। इस वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले तक सभी जिलों में तैनाती होनी है।

सड़क हादसे कम करने की कोशिश

जिलों में एआरटीओ रोड सेफ्टी तैनात किए जा रहे हैं, जो सड़क हादसे घटाने के लिए कार्य करेंगे। साथ ही एमवीआई व एएमवीआई भी तैनात किए जाएंगे, जिससे वाहनों की जांच-पड़ताल का काम भी तेज हो सकेगा। - दयाशंकर सिंह, परिवहन मंत्री

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली मेट्रो में बिना परीक्षा सुपरवाइजर बनने का गोल्डन चांस, 25 अक्टूबर तक यहां भेज दें फॉर्म

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो में नौकरी पाने के इच्छुक युवाओं के लिए डीएमआरसी (DMRC) ने सुपरवाइजर के पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। उम्मीदवार डीएमआरसी की आधिकारिक वेबसाइट delhimetrorail.com पर जाकर एप्लिकेशन फॉर्म भर सकते हैं। दिल्ली मेट्रो में नौकरी कैसे मिलेगी? दिल्ली मेट्रो कितनी सैलरी देती है? सबकुछ जानिए

नई दिल्ली। दिलवालों की दिल्ली और दिल्ली की लाइफलाइल यानी दिल्ली मेट्रो में सरकारी नौकरी पाना चाहते हैं, तो आपके लिए बढ़िया मौका आ गया है। हाल ही में दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (DMRC) ने सुपरवाइजर की वैकेंसी के लिए भर्ती नोटिफिकेशन जारी किया है। जिसके बाद इस वैकेंसी के लिए ऑफिशियल वेबसाइट delhimetrorail.com पर आवेदन की प्रक्रिया भी चालू हो गई है। वहीं आवेदन करने की आखिरी तारीख 25 अक्टूबर 2024 है। इसके बाद किए गए आवेदन स्वीकार नहीं होंगे।

वैकेंसी डिटेल्स

जो उम्मीदवार लंबे समय से दिल्ली मेट्रो में नौकरी पाना चाहते हैं, उनके लिए यह सुनहरा मौका है। इस भर्ती के जरिए दिल्ली मेट्रो में सुपरवाइजर इलेक्ट्रिकल (Post Code-01/NE/Sup/E) के पद पर चयन किया जाएगा। दिल्ली मेट्रो में सुपरवाइजर वैकेंसी में आवेदन करने केलिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान से तीन साल का इंजीनियरिंग डिप्लोमा इलेक्ट्रिकल या संबंधित ट्रेड में होना चाहिए। साथ ही अभ्यर्थियों के पास इलेक्ट्रिकल डिपार्टमेंट/रोलिंग स्टोक मेंटनेंस एंड ओपरेशंस में काम का अनुभव होना चाहिए।

पद का नाम	वैकेंसी	नोटिफिकेशन
सुपरवाइजर	05	D M R C Supervisor Recruitment 2024

सैलरी

सैलरी-सुपरवाइजर के पद सेलेक्ट होने के बाद अभ्यर्थियों को न्यूनतम 45400/-से लेकर 66000/-रुपये वेतन दिया जाएगा।

चयन प्रक्रिया- दिल्ली मेट्रो की इस भर्ती में उम्मीदवारों का चयन बिना एग्जाम के झंझट के सीधे पर्सनल इंटरव्यू के आधार पर किया जाएगा।

आयुसीमा- दिल्ली मेट्रो की यह भर्ती अनुभवी/वर्तमान में कार्यरत या संबंधित क्षेत्र से रिटायर अनुभवी कर्मचारियों के लिए है। जिसमें आवेदन करने के लिए उम्मीदवारों की न्यूनतम उम्र 55 वर्ष और अधिकतम 62 वर्ष होनी चाहिए।

ऐसे करें आवेदन

डीएमआरसी की इस भर्ती में उम्मीदवारों को ऑफलाइन आवेदन की प्रक्रिया पूरी करनी होगी। नोटिफिकेशन में ही आवेदन फॉर्म उपलब्ध है। जिसका प्रिंटआउट निकालकर सभी जरूरी दस्तावेजों के साथ डीएमआरसी को स्पीड पोस्ट के जरिए भेजना होगा। पता है- एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (HR), दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड, मेट्रो भवन, फायर ब्रिज लेन, बारहखंबा रोड, नई दिल्ली। इसके अलावा अभ्यर्थी carrer@dmrc.org पर भी मेल भेज सकते हैं। इस भर्ती से संबंधित अन्य किसी भी जानकारी के लिए आधिकारिक नोटिफिकेशन को चेक कर सकते हैं।

दशहरा 2024: देश में इन जगहों पर नहीं होता रावण दहन, दशहरे पर कहीं होती है पूजा तो कहीं मनाते हैं शोक

हर साल पूरे देश में दशहरा मनाया जाता है। इस साल Dussehra 2024 शनिवार यानी 12 अक्टूबर को मनाया जा रहा है। इस खासे मौके पर लोग रावण दहन कर बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाते हैं। हालांकि भारत में कुछ ऐसी जगहें भी हैं जहां रावण को जलाया नहीं जाता है। यहां रावण की पूजा और आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है।

नई दिल्ली। देशभर में आज दशहरा का पर्व मनाया जा रहा है। बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक यह पर्व हर साल धूमधाम से बनाया जाता है। प्रभु श्री राम द्वारा राक्षस राज रावण के वध के उपलक्ष्य में हर साल आश्विन माह में दशहरा मानते हैं। आमतौर पर इस त्योहार को रावण दहन कर सेलिब्रेट किया जाता है। देश के विभिन्न हिस्सों में रावण के पुतले को आग लगाकर अच्छाई की जीत का जश्न मनाते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में कुछ ऐसी जगह भी हैं, जहां दशहरे के दिन रावण दहन नहीं किया जाता। यहां पर इस दिन रावण की मृत्यु का शोक मनाया जाता है।

दशहरे के मौके पर आज हम आपको देश की उन्हीं जगहों के बारे में बताने वाले हैं, जहां विजयादशमी पर रावण दहन नहीं, बल्कि रावण के मरने पर दुख मनाया जाता है।

मंदसौर, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश के मंदसौर में रावण दहन नहीं किया जाता। ऐसा इसलिए क्योंकि इस शहर को रावण की पत्नी मंदोदरी का मायका कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि मंदोदरी यही की रहने वाली थी और इसलिए रावण यहां दामाद माना जाता है। इसी मान्यता के अनुसार यहां रावण का दहन नहीं, बल्कि उनकी पूजा होती है।

बेंगलुरु, कर्नाटक

कर्नाटक के बेंगलुरु में भी कुछ समुदाय के लोग रावण की पूजा करते हैं। यहां रावण की पूजा-अर्चना तो होती ही है, साथ ही उनके महान ज्ञान और शिव के लिए अनन्य भक्त की वजह से भी उन्हें आदर भाव दिया जाता है। इसलिए यहां दशहरे पर रावण दहन नहीं किया जाता।

कांकेर, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ का कांकेर एक और ऐसी जगह है, जहां रावण दहन नहीं किया जाता। यहां रावण को एक विद्वान के रूप में पूजा जाता है। इसलिए दशहरे के दिन उनके पुतले को जलाने की जगह रावण के ज्ञान और उनके बल को याद किया जाता है।

बिसरख, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के इस गांव को लेकर मानता है कि यहां रावण का जन्म हुआ था और इसलिए यहां के लोग रावण को अपना पूर्वज मानते हैं। साथ ही ऋषि विश्रवा का पुत्र होने की वजह से रावण को महा ब्राह्मण भी माना जाता है। ऐसे में दशहरे के दिन यहां रावण दहन की जगह उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है।

गढ़चिरौली, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र की इस जगह पर रहने वाले गोंड जनजाति के लोग खुद को रावण का वंशज मानते हैं। उनका ऐसा मानना है कि सिर्फ तुलसीदास रचित रामायण में रावण को बुरा दिखाया गया है, जो कि गलत है। इसलिए वे रावण को अपना पूर्वज मान उनकी पूजा करते हैं और रावण का पुतला नहीं जलाते।

मंडोर, राजस्थान

राजस्थान के इस गांव में भी दशहरे पर रावण दहन नहीं किया जाता। ऐसा इसलिए क्योंकि यहां के लोगों का मानना है कि यह जगह मंदोदरी के पिता की राजधानी थी और यहीं पर रावण ने उनसे विवाह किया था। इसलिए रावण को दामाद मानने की वजह से यहां के लोग उनका सम्मान करते हैं और उनका पुतला नहीं जलाते।

महिलाओं में ज्यादा आम है आर्थराइटिस की समस्या, लाइफस्टाइल में कुछ बदलाव कर सकते है बचाव

किसी को भी अपना शिकार बना सकता है। यह जोड़ों से जुड़ी एक समस्या है जिसकी वजह से अक्सर जोडों और हड्डियों में दर्द होता है। यह समस्या आमतौर पर महिलाओं (Arthritis in women)) ज्यादा अपना शिकार बना कर सकती है। ऐसे में कुछ शुरुआती लक्षणों की वजह से इसे कंट्रोल किया जा सकता है। जानते हैं इसके लक्षण और बचाव के तरीके।

नई दिल्ली। अर्थराइटिस एक आम समस्या है, जो इन दिनों कई लोगों के लिए परेशानी की वजह बनी हुई है। इसे आम तौर पर गठिया के नाम से जाना जाता है, जो अक्सर बढ़ती उम्र में लोगों को अपना शिकार बनती है। हालांकि, यह किसी भी उम्र के व्यक्ति को अपनी चपेट में ले सकती है। खासकर महिलाओं में यह बीमारी ज्यादा आम होती है। घर-परिवार की जिम्मेदारी और कामकाज के बोझ के तले अक्सर महिलाएं अपने स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर देती है, जिसकी वजह से वह समय रहते गठिया जैसी बीमारी की पहचान नहीं कर पाती और बाद में यह उनके लिए परेशानी की वजह बन जाती है।

इस बीमारी के बढ़ते मामलों और लोगों में इसके प्रति जागरूकता की कमी को देखते हुए हर साल 12 अक्टूबर को World Arthritis Day मनाया जाता है। इस मौके पर आज इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे महिलाओं में गठिया के शुरुआती लक्षण और इससे बचने के लिए कुछ ऐसे बदलावों के बारे में, जिन्हें लाइफस्टाइल में शामिल कर आप भी अपनी सुरक्षा कर सकती हैं।

महिलाओं में क्यों आम है गठिया?

दरअसल, महिलाओं (Arthritis in women) के जोड़ ज्यादा लचीले होते हैं, जिसकी वजह से उनमें टूट-फूट का खतरा ज्यादा रहता है, जिस कारण ओस्टियोआर्थराइटिस का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा हार्मोंस में बदलाव भी इसमें एक अहम भूमिका निभाते हैं। खासकर मेनोपॉज के दौरान महिलाओं के शरीर में एस्ट्रोजन में गिरावट देखने को मिलती है, जो जोड़ों पर सुरक्षात्मक प्रभाव डालता है। ऐसे में शरीर में एस्ट्रोजन की कमी होने पर सूजन और जोड़ों का दर्द हो सकता है।

महिलाओं में गठिया के शुरुआती लक्षण

गठिया होने पर इसके पर शुरुआती लक्षण (Arthritis symptoms) नजर आते हैं, जिनकी पहचान कर समय रहते से कंट्रोल किया जा सकता है। महिलाओं में गठिया के शुरुआती लक्षण निम्न हैं, जो अक्सर सुबह के समय बदतर हो जाना -

- जोड़ों में दर्द
- कठोरता
- सुजन
- थकान
- गति में कमी आदि।

इन तरीकों से करें अपना बचाव

गठिया के खतरे को कम करने के लिए शारीरिक रूप से सक्रिय रहना जरूरी है। इसके लिए आप वॉकिंग, स्विमिंग या योग जैसी आसान एक्सरसाइज कर सकते हैं।

इसके अलावा स्वस्थ वजन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि मोटापे की वजह से अर्थराइटिस का खतरा बढ़ जाता है। ज्यादा वजन जोड़ो, विशेष कर घुटनों, कूल्हों और पीठ के निचले हिस्से पर तनाव की वजह बन सकता है।

लंबे समय तक बैठने की आदत भी आपके लिए हानिकारक हो सकती है। इसलिए कोशिश करें कि लगातार लंबे समय तक बैठे न रहें और बीच-बीच में ब्रेक लेते रहें।

दर्द वाली जगह पर ठंडा या गरम सेंक करने से भी आराम मिल सकता है। इसके अलावा सपोर्टेड फुटवियर और क्रेन्स या जॉइंट ब्रेसस जैसे डिवाइस भी आपके लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

डायबिटीज पहुंचा सकता है आंखों को नुकसान, जानें कैसे कर सकते हैं इसकी वक्त रहते पहचान

डायबिटीज एक लाइलाज बीमारी है जिससे बचाव करना बेहद जरूरी है। इसे ठीक भले ही नहीं किया जा सकता लेकिन इसे मैनेज जरूर कर सकते हैं। डायबिटीज कंट्रोल न होने पर शरीर के कई अंग प्रभावित होने लगते हैं जिनमें आंखें भी शामिल हैं। यहां हम इसी बारे में जानेंगे कि कैसे डायबिटीज आंखों को नुकसान पहुंचा सकता है और इसके लक्षण कैसे होते हैं।

नई दिल्ली। भारत में डायबिटीज मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हाल फिलहाल की बात करें, तो लगभग 10 करोड़ से भी ज्यादा लोग इस बीमारी से पीड़ित हैं। आज के समय में सिर्फ बड़े ही नहीं, बच्चे भी इसका तेजी से शिकार हो रहे हैं। डायबिटीज में शरीर इंसुलिन हॉर्मोन को बनाने और उसे इस्तेमाल करने की क्षमता कम हो जाती है या खत्म हो जाती है। यह बीमारी बढ़ते समय के साथ किडनी, नसों, दिल और आंखों को प्रभावित कर सकती है। आज हम इसी बारे में बात करेंगे कि कैसे डायबिटीज आपकी आंखों को प्रभावित कर सकती है। आइए जानें।

क्या है डायबिटीक रेटिनोपैथी?

डायबिटीज के चलते होने वाली आंखों की बीमारी को डायबिटीक रेटिनोपैथी कहते हैं, जो बहुत ही गंभीर है इसके चलते आंखों की रोशनी भी जा सकती है। हालांकि, समय पर जांच और उपचार से काफी हद तक इस समस्या को रोका जा सकता है।

डायबिटीक रेटिनोपैथी के ज्यादातर मामले बिना लक्षण के ही होते हैं। इस बीमारी का तब तक पता नहीं चलता, जब तक कि नियमित तौर से रेटिनल जांच न कराई जाए। इसलिए इसे 'दृष्टि का साइलेंट चोर' भी कहा जाता है। शुगर के मरीजों में डायबिटीक रेटिनोपैथी के चांसेज समय के साथ बढ़ते जाते हैं। इसलिए डायबिटीज मरीजों के लिए बेहद जरूरी है डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाओं का सेवन करना और जरूरी परहेज करना। इस बीमारी को कंट्रोल में रखकर हेल्दी लाइफ जी सकते हैं।

कैसे होते हैं डायबिटीक रेटिनोपैथी के लक्षण?

डायबिटीक रेटिनोपैथी के लक्षण

- धुंधला दिखना
- रंग पहचानने में दिक्कत
- आंखों के आगे अंधेरा छाना
- आंखों में धब्बे नजर आना

क्यों जरूरी है नियमित जांच?

डायबिटिक रेटिनोपैथी जांच की आवश्यकता को लेकर विट्रीओ रेटिनल सोसाइटी ऑफ इंडिया के जनरल सेकेट्री का कहना है कि, डायबिटीक रेटिनोपैथी के मामले इसलिए तेजी से बढ़ रहे हैं, क्योंकि इसे लेकर लोगों में जानकारी और जागरूकता दोनों की कमी है। दूसरा की शुरुआती स्टेज में ज्यादातर मामले बिना लक्षण के ही होते हैं। तीनों ही चीजें मिलकर स्थिति को गंभीर बना देती हैं इसलिए बेहद जरूरी है डायबिटीज से पीड़ित मरीजों को डायबिटीक रेटिनोपैथी के बारे में जागरूक करना।

आरएसएसडीआई के जनरल सेकेट्री डॉ. संजय अग्रवाल का कहना है कि, डायबिटीक रेटिनोपैथी एक ऐसी बीमारी है, जिसका अगर समय पर इलाज न किया जाए, तो यह अंधेपन का कारण बन सकती है। इस बीमारी को लेकर डॉक्टर्स को मरीजों को विस्तार से बताने और नियमित तौर पर जांच की आवश्यकता को लेकर जागरूक करने की जरूरत है।

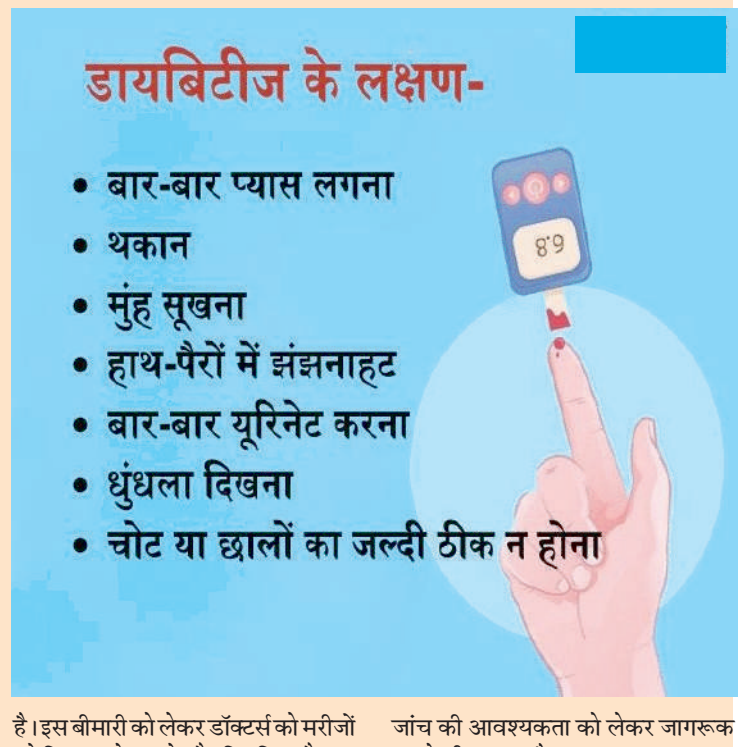

महिलाओं ही नहीं पुरुषों को भी हो सकता है ब्रेस्ट कैंसर, लाइफस्टाइल में इन बदलावों को अपनाकर रहें सुरक्षित

कैंसर का एक गंभीर प्रकार है जो किसी को भी अपना शिकार बना सकता है। आमतौर पर यह महिलाओं को ज्यादा होता है लेकिन पुरुष भी इसका शिकार होते हैं। ऐसे में हर साल अक्टूबर में Breast Cancer Awareness Month मनाया जाता है। इस मौके पर जानते हैं इसका खतरा कम करने के लिए लाइफस्टाइस में कुछ जरूरी बदलावों के बारे में।

नई दिल्ली। कैंसर एक गंभीर बीमारी है, जो दुनिया भर में एक प्रमुख स्वास्थ्य चिंता का विषय बनी हुई है। इसके कई प्रकार होते हैं, जो शरीर के विभिन्न हिस्सों को प्रभावित करते हैं और उन्हीं के नाम से जाने जाते हैं। ब्रेस्ट कैंसर (breast cancer) इन्हीं में से एक है, जो इस बीमारी का सबसे आम प्रकार है। यह एक ऐसी बीमारी है, जो तब होती है जब ब्रेस्ट सेल्स नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं और ट्यूमर का रूप ले लेते हैं।

पुरुषों को भी हो सकता है ब्रेस्ट कैंसर

यह बीमारी पुरुष और महिलाओं दोनों को प्रभावित कर सकती है, लेकिन पुरुषों में इसके मामले कम ही सामने आते हैं। ज्यादातर महिलाएं ही इसका शिकार होती है। हालांकि बावजूद उसके आज भी कई लोगों में इसलिए का जागरूकता की कमी है। ऐसे में ब्रेस्ट कैंसर के बारे में लोगों को जागरूक करने के मकसद से हर साल अक्टूबर में में Breast Cancer Awareness Month मनाया जाता है।

ब्रेस्ट कैंसर की वजह

यह कैंसर कई वजह से लोगों को अपना शिकार बन सकती है। हालांकि, इनमें से कुछ कारण ऐसे हैं, जिन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। लाइफस्टाइल से जुड़ी आदतें इनमें से एक है, जिन्हें कंट्रोल कर काफी हद तक इस बीमारी का खतरा कम किया जा सकता है। ऐसे में इस आर्टिकल में गुरुग्राम, मैक्स हॉस्पिटल में मेडिकल ऑन्कोलॉजी के सीनियर कंसल्टेंट डॉ. भुवन चुघ बता रहे हैं, कुछ ऐसे बदलावों के बारे में जिन्हें अपनी लाइफ स्टाइल में शामिल कर आप ब्रेस्ट कैंसर के खतरे को कम कर सकते हैं।

अपना वजन नियंत्रण में रखें

मोटापे से स्तन कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है, खासकर मेनोपॉज के बाद। इसलिए एक संतुलित आहार खाने की कोशिश करें, जिसमें साबुत अनाज, फल, सब्जियां और

लीन प्रोटीन ज्यादा मात्रा में हो।

रोजाना एक्सरसाइज करें

हफ्ते में 150 मिनट मीडियन एरोबिक एक्सरसाइज या हफ्ते में 75 मिनट हैवी एक्सरसाइज करने का लक्ष्य रखें। व्यायाम एस्ट्रोजन के स्तर को कम करता है और वजन नियंत्रण में सहायता करता है।

सीमित या बिल्कुल भी न पिएं शराब

कई अध्ययनों में शराब पीने और ब्रेस्ट कैंसर के खतरे के बीच संबंध का संकेत मिला है। ऐसे में इससे बचने के लिए रोजाना शराब की एक ड्रिंक से ज्यादा न लें।

धूम्रपान छोड़ें

तंबाकू का इस्तेमाल भी ब्रेस्ट कैंसर जैसी कई घातक बीमारियों से जुड़ा हुआ है। साथ ही इससे अन्य कई नुकसान भी होते हैं। ऐसे में अपने सामान्य स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए धूम्रपान छोड़ने के लिए मदद लें।

ब्रेस्ट फीडिंग

अगर संभव हो तो अपने बच्चों को ब्रेस्ट फीडिंग जरूर कराएं। अगर 1.5 से 2 साल तक बच्चों को स्तनपान कराया जाए, तो स्तन कैंसर के खतरे को थोड़ा कम किया जा सकता है।

नियमित चांज कराएं

ब्रेस्ट कैंसर का सही समय से पता लगाने के लिए जरूरी है कि अपना चेकअफ लगातार करवाते रहें। आप इसके लिए क्लिनिकल ब्रेस्ट एग्जामिनेशन या फिर मैमोग्राम टेस्ट करवा सकते हैं।

दशहरा पर राष्ट्रपति मुर्मु और पीएम मोदी ने किया रावण दहन...

परिवहन विशेष न्यूज

बुराई पर अच्छाई का प्रतीक दशहरा पर शनिवार शाम को लालकिला ग्राउंड में रावण कुंभकर्ण और मेघनाथ का पूतला दहन हो गया है। लालकिला स्थित माधव दास पार्क में श्री धार्मिक रामलीला कमेटी में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीर चलाकर रावण दहन किया। इससे पहले उन्होंने भगवान राम और लक्ष्मण और माता सीता को तिलक लगाया।

नई दिल्ली। बुराई पर अच्छाई का प्रतीक पर दहशरा पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रावण को तीर मारा और उसका दहन शुरू हो गया। दिल्ली में लालकिला स्थित माधव पार्क में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ का पूतला धू-धूकर जल गया। माधव दास पार्क में श्री धार्मिक रामलीला कमेटी में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने पहुंचकर रामलीला मंच पर शाम को भगवान राम और लक्ष्मण की भूमिका निभाने वाले कलाकारों के माथे पर तिलक लगाया।

लालकिला ग्राउंड में पहुंचेंगे अभिनेता

इसके अलावा लालकिला के पास होने वाली लवकुश रामलीला में अभिनेता अजय देवगन, फिल्म निर्माता रोहित शेट्टी और अभिनेत्री करीना कपूर भी आएंगी। जहां वो रावण दहन करेंगे। वही, नव श्री धार्मिक में भी प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव पुतला दहन करेंगे।

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

लाल किला मैदान में राष्ट्रपति और पीएम के आगमन से लाल किला मैदान में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। साथ ही सुरक्षा के मद्देनजर केवल उन्हीं वाहनों का प्रवेश पार्किंग परिसर में जाने दिया जा रहा है, जिनके लिए विशेष पास जारी किए गए हैं।

लाल किला के पीछे रिंग रोड, हनुमान सेतु, और नेताजी सुभाष मार्ग समेत विशिष्ठ अतिथियों के आगमन से यातायात बाधित है। समितियों ने नागरिकों से आग्रह किया है कि वह सार्वजनिक परिवहन के माध्यम से लाल किला में रामलीला मैदानों में पहुंचे। वहीं, निगम की टीम ने विशेष फॉगिंग अभियान चलाकर मच्छररोधी गतिविधियां की।

100 फुट से भी ज्यादा ऊंचे पुतले

100 से लेकर 120 फुट ऊंचे पुतले रामलीला मैदानों में खड़े किए गए। पुतलों को डिजिटली आतिशबाजी के जरिए जलाया जाएगा। पर्यावरण के मद्देनजर इसके लिए पटाखों की आवाज पुतला दहन के दौरान निकलेगी। बाक्स कहीं, चाट पकौड़ी तो कही डिजीटल आवाज से कुंभकरण को जगाने का प्रयास दशहरे से पूर्व रामलीलाएं समापन की ओर बढ़ रही है।

भाजपा हमेशा दिल्ली के गरीब झुग्गी बस्ती वालों के खिलाफ क्यों रहती है? : सौरभ भारद्वाज

सुषमा रानी

नई दिल्ली, पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि आप सभी को ज्ञात होगा, कि दिल्ली में गरीब झुग्गी निवासियों को झुग्गी के बदले पक्का मकान देने की एक योजना चलाई जाती है, जिसे प्रधानमंत्री आवास योजना कहा जाता है और इस योजना के तहत झुग्गियों में रहने वाले गरीब लोगों को झुग्गी के बदले पक्का मकान दिया जाता है, ताकि वह लोग और उनके बच्चे एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकें और साथ ही साथ दिल्ली में झुग्गियों की संख्या को काम किया जा सके I उन्होंने कहा कि इसी श्रृंखला में अभी कुछ समय पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने खुद कालकाजी में स्थित ऐसे ही फ्लैटों का उद्घाटन किया था, जो कि झुग्गी में रहने वाले व्यक्तियों को झुग्गी के बदले मिलने थे I इस संबंध में हाल ही में जारी हुए एक स्टिंग ऑपरेशन की बात करते हुए मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि यह बेहद ही अफसोस जनक और आश्चर्य की बात है, कि जिन फ्लैटों का उद्घाटन खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झुग्गी में रहने वाले लोगों को आबंटित करने के लिए किया था, उन फ्लैटों को एक बड़े भ्रष्टाचार के तहत ब्लैक में उन लोगों को बेचा जा रहा है जो लोग झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोग नहीं हैं I

सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि आज एक बड़ा प्रश्न यह उठता है, कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा गरीबों के खिलाफ क्यों नजर आती है? जब भी कभी गरीबों की भलाई का कोई काम होता है तो भारतीय जनता पार्टी हमेशा इसकी खिलाफत करती क्यों नजर आती है? उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जब दिल्ली सरकार ने गरीबों के लिए 200 यूनिट बिजली मुफ्त की भाजपा ने इसकी खिलाफत की, जब दिल्ली सरकार ने 20 हजार लीटर पानी गरीबों के लिए

मुफ्त किया भाजपा ने इसकी खिलाफत की और जब दिल्ली सरकार ने महिलाओं की बस में यात्रा मुफ्त की भाजपा ने उसकी भी खिलाफत की और अब जो फ्लैट गरीबों के लिए झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोगों के लिए बनाए गए थे, भाजपा शासित केंद्र सरकार की आंखों के सामने वही फ्लैट ब्लैक में अन्य लोगों को बेचे जा रहे हैं I सौरभ भारद्वाज ने कहा कि पिछले 2 साल में हम सभी ने देखा है कि किस प्रकार से केंद्र सरकार की अंजेसियो जैसे कि डीडीए, रेलवे, एलएनडीओ तथा एएसआई आदि ने अलग-अलग क्षेत्र में बसी लिस्टेड क्लस्टर एरिया को उजाड़ा है और लाखों लोगों को बेघर किया है I उन्होंने कहा कि यह वही लिस्टेड क्लस्टर एरिया थे, जिनको झुग्गी के बदले फ्लैट मिलना था I भाजपा शासित केंद्र सरकार और उसके अधीन आने वाली एजेंसियों ने जबरदस्ती इन झुग्गियों को उजाड़ दिया और अब इनको मिलने वाले फ्लैटों को ब्लैक में बेचा जा रहा है I सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह सीधे-सीधे एक भ्रष्टाचार का खेल चल रहा है, कि जिन क्लस्टर एरिया को उजाड़ा गया, अब वह लोग दूसरी जगह पर जाकर झुग्गियाँ बसा रहे हैं, फिर दोबारा से उनके नाम पर नए फ्लैट बनाए जाएंगे और उन्हें भी फिर ब्लैक में बेच दिया जाएगा I

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि किसी भी झुग्गी बस्ती में रहने वाले व्यक्ति को झुग्गी के बदले फ्लैट मिलने की एक लंबी प्रक्रिया होती है I इस बात की जांच की जाती है, कि यह झुग्गी कितने साल पहले बनी थी, उस व्यक्ति के उस झुग्गी में रहने के साक्ष्य इकट्ठा किए जाते हैं, कई प्रकार के कागजात उस व्यक्ति को प्रस्तुत करने पड़ते हैं, तब कहीं जाकर उस व्यक्ति को झुग्गी के बदले फ्लैट मिलता है I परंतु यह फ्लैट उन लोगों को बेचे जा रहे हैं, जिनका ना तो किसी झुग्गी बस्ती एरिया में कोई नाम है और ना ही वह लोग उस झुग्गी बस्ती के रहने वाले हैं I उन्होंने कहा कि यह संभव ही नहीं है कि डीडीए के उच्च अधिकारियों की मिली भगत के बिना यह सब भ्रष्टाचार का खेल किया जा सके I सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली के उपराज्यपाल विनय सक्सेना की नाक के नीचे इतना बड़ा भ्रष्टाचार का खेल चल रहा है I उन्होंने कहा कि क्या ये संभव है कि उपराज्यपाल विनय सक्सेना को इस बात की जानकारी ही ना हो की किस प्रकार से गरीब झुग्गी वालों को मिलने वाले फ्लैट ब्लैक करके एक भ्रष्टाचार के तहत उन लोगों को बेचे जा रहे हैं जिनका झुग्गी बस्ती से कोई लेना-देना नहीं है ? सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि इस भ्रष्टाचार के माध्यम से न केवल झुकी बस्ती में रहने वाले लोगों का नुकसान किया जा रहा है, बल्कि साथ ही साथ पूरी दिल्ली का नुकसान

93 करोड़ की 100 नई योजनाओं को दी मंजूरी, दिल्ली के गांवों में विकास को मिलेगी गति....

दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड की बैठक शुक्रवार को विकास मंत्री गोपाल राय की अध्यक्षता में दिल्ली सचिवालय में आयोजित की गई | जिसमें सदस्यों ने लंबित और नए प्रस्तावों का मामला उठाया। इसके बाद विकास मंत्री गोपाल राय ने बताया कि दिल्ली के गांवो में विकास सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड का गठन किया था|

नई दिल्ली। दिल्ली के गांवों में विकास को और गति देने के लिए आम आदमी पार्टी की सरकार ने शुक्रवार को 93 करोड़ रुपए की 100 पर्योजनाओं को मंजूरी दी है। इस संबंध में दिल्ली के विकास मंत्री गोपाल राय की अध्यक्षता में दिल्ली सचिवालय में ग्राम विकास बोर्ड की मीटिंग आयोजित की गई। राजधानी के गांवों में विकास सुनिश्चित करने के लिए दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड ने 100 योजनाओं को मंजूरी दी है। इसके तहत सड़कों, नालियों, जल निकाय, सामुदायिक केंद्र, पार्क, श्मशान, खेल मैदान आदि से जुड़े विकास कार्य किए जाएंगे। दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में 93 करोड़ रुपए के लागत से विकास कार्य किए जाएंगे। बोर्ड मीटिंग के दौरान सभी अधिकारियो को ग्राम विकास की परियोजनाओं को तय समय सीमा के अंदर पूरा करने के निर्देश दिए गए है।

दिल्ली में दर्दनाक घटना: रामलीला में कुंभकरण का किरदार निभा रहे कलाकार की हार्ट अटैक से मौत

दिल्ली की सामाजिक रामलीला ग्रेटर कैलाश में एक दुखद घटना घटी जब कुंभकरण का किरदार निभाने वाले 60 वर्षीय कलाकार विक्रम तनेजा को शुक्रवार रात को हार्ट अटैक आ गया। तुरंत उन्हें अस्पताल ले जाया गया लेकिन इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। इस घटना से रामलीला समिति और कलाकारों में शोक की लहर है।

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली में सामाजिक रामलीला ग्रेटर कैलाश की ओर से चिराग दिल्ली में आयोजित रामलीला में कुंभकरण का किरदार निभा रहे कलाकार की शुक्रवार रात को हार्ट अटैक (Heart Attack) से मौत हो गई। उनकी जगह शनिवार को दूसरे कलाकार ने कुंभकरण का किरदार निभाया।

जानकारी के अनुसार, मुंबई निवासी 60 वर्षीय विक्रम तनेजा पिछले कई साल से सामाजिक रामलीला ग्रेटर कैलाश से जुड़े थे। वह हर साल कुंभकरण का किरदार निभाते थे। शुक्रवार को रामलीला का मंचन समाप्त होने के बाद मेकअप हटा रहे थे। तभी अचानक उनकी तबीयत खराब हो गई।

साथियों ने अस्पताल में कराया भर्ती

वह बेसुध हो गए। उनके साथियों ने तुरंत उन्हें नजदीक के

अस्पताल पहुंचाया। कुछ देर बाद भर्ती रहने के बाद उन्हें आराम नहीं मिला। उनकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई। उन्होंने दूसरे अस्पताल में भर्ती करने के लिए कहा।

इलाज के दौरान गई जान

इस पर उन्हें दूसरे निजी अस्पताल ले जाया गया। यहां पर कुछ देर उपचाराधीन रहने के बाद उनकी मौत हो गई। डॉक्टर्स ने बताया कि हार्ट अटैक की वजह से विक्रम की जान गई है। इस मामले में पुलिस को सूचना दे दी गई है। पुलिस ने मृतक के स्वजन को घटना के बारे में बता दिया।

दिल्ली में जला रावण

बुराई पर अच्छाई का प्रतीक पर दहशरा (Dussehra) पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रावण को तीर मारा और उसका दहन शुरू हो गया। दिल्ली में लालकिला स्थित माधव पार्क में रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ का पूतला धू-धूकर जल गया।

माधव दास पार्क में श्री धार्मिक रामलीला कमेटी में राष्ट्रपति (President Draupadi Murmu) और प्रधानमंत्री (PM Modi) ने पहुंचकर रामलीला मंच पर शाम को भगवान राम और लक्ष्मण की भूमिका निभाने वाले कलाकारों के माथे पर तिलक लगाया।

उपराज्यपाल ने विशेष पीजीटी के 200 अतिरिक्त पदों को मंजूरी दे दी

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पीजीटी शिक्षकों के 200 अतिरिक्त पदों के सृजन को मंजूरी दे दी। ये मंजूरी विशेष शिक्षा शिक्षक के पद पर है यानि ये पीजीटी शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों को पढ़ाएंगे। माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर निर्धारित ये पद दिल्ली के शिक्षा निदेशालय के तहत आने वाले सरकारी स्कूलों में नियमित आधार पर भरे जाएंगे। उपराज्यपाल कार्यालय के अनुसार, इस निर्णय का उद्देश्य पक्षपात, भ्रष्टाचार, आरक्षण मानदंडों के उल्लंघन और गैर-स्थायी पदों से जुड़े कर्मचारी उत्पीड़न जैसे मुद्दों को कम करना है।

7600 करोड़ के ड्रग्स सिंडिकेट का अहम खिलाड़ी है अखलाक, परिवार ने किया बेदखल; रोते-रोते चली गई मां की आंख

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की स्पेशल सेल ने हापुड़ के मोहल्ला पीरबाउद्दीन के अखलाक को 2000 करोड़ रुपए की ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया है। अखलाक ड्रग्स के 7600 करोड़ वाले सिंडिकेट से जुड़ा हुआ है और उसके घर पर देश के विभिन्न प्रदेशों के संदिग्ध लोगों का आना-जाना लगा रहता था। संभावना है कि उसने ड्रग्स की सप्लाई के लिए चेन बनाई हुई थी।

हापुड़। दिल्ली की स्पेशल सेल द्वारा दो हजार करोड़ रुपये की ड्रग्स के साथ गिरफ्तार हुआ कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला पीरबाउद्दीन का अखलाक ड्रग्स के सिंडिकेट से जुड़ा है। इसकी भनक न जिला पुलिस को लगी न खुफिया विभाग को।

अंदेशा है कि इस सिंडिकेट का वह अहम हिस्सा है। देश के विभिन्न प्रदेशों के संदिग्ध लोगों का उसके घर आना-जाना लगा रहता था। संभवतः उसने ड्रग्स की सप्लाई के लिए चेन बनाई हुई थी। वह चंदन की लकड़ी व प्रतिबंधित औषधि की तस्करी भी कर चुका है। इस बात से पर्दा किसी और ने नहीं बल्कि, उसके परिवारवालों ने किया है।

परिवार ने अखलाक को किया बेदखल

करीब चार साल पहले उसे चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया था। उसकी गिरफ्तारी के बाद अब उसके स्वजन व परिचितों पर इंटेलिजेंस एजेंसी की नजर है।

रफीक नगर के शमशाद ने बताया कि उसके पिता इस्लामुद्दीन व माता अनीसा हैं। बड़ा भाई इसरार भी परिवार के साथ उसी के साथ रहता है।

अखलाक सबसे बड़ा भाई है और वह मोहल्ला पीरबाउद्दीन में पत्नी समरीन, पुत्री जूबी, जया व छह वर्षीय बच्ची के साथ रहता है। करीब दस साल पहले अखलाक चंदन की लकड़ी की खरीद-फरोख्त करता था।

मेरठ के रिठानी डिपो से माल खरीदकर वह व्यापारियों को सप्लाई करता था। इसकी आड़ में वह चोरी छिपे चंदन की लकड़ी की तस्करी करने लगा।

कई तरह के गैरकानूनी धंधे में लिप्त था अखलाक

वर्ष 2015 में चंदन की लकड़ी की खरीद-फरोख्त के लिए लिया अनुमति दस्तावेज (रवन्ना) खो गया था। जिसके बाद अखलाक समुद्री घोड़े व हिमालय पर पाई जाने वाली प्रतिबंधित औषधियों का व्यापार करने लगा।

स्वास्थ्य विभाग ने यौन शोषण की बात उजागर करते हुए महिला डॉक्टर का ही दूसरे अस्पताल में ट्रांसफर कर दिया- संजय सिंह

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में अपने ही मेडिकल सुपरिटेंडेंट द्वारा यौन शोषण की शिकार महिला डॉक्टर को न्याय नहीं मिलने पर आम आदमी पार्टी ने भाजपा और उसके चहेते एलजी साहब पर तीखा हमला बोला है। वरिष्ठ नेता संजय सिंह ने कहा कि भाजपा दिल्ली में भी कोलकाता जैसी घटना का इंतजार कर रही है। इसीलिए एलजी साहब न सिर्फ यौन शोषण करने वाले एमएस को बचा रहे हैं, बल्कि उल्टा उस महिला डॉक्टर के खिलाफ ही उनके अधीन अफ़सरों ने जांच बैठा दी है। कई महीने धक्के खाने के बाद एक आंतरिक जांच कमेटी बनी और उसमें पीड़िता ने यौन शोषण का आरोप साबित भी कर दिया। इसके बावजूद एमएस पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अलबत्ता, पीड़िता का ही ट्रांसफर कर दिया गया। इसलिए भाजपा और पीएम मोदी को बताना चाहिए कि क्या उन्होंने एलजी को अफसरों के ट्रांसफर-पोस्टिंग का अधिकार इसलिए ही दिया है, ताकि वह महिलाओं का शोषण करने वालों को संरक्षण दे सकें?

''आप'' मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा नियुक्त दिल्ली के एलजी के संरक्षण में पिछले एक-डेढ़ साल से सरकारी अस्पताल में तैनात एक महिला डॉक्टर का शोषण चल रहा है। बार-बार उसकी शिकायत के बाद भी एलजी शोषण करने वाले मेडिकल सुपरिटेंडेंट (एमएस) को बचा रहे हैं और पीड़ित महिला डॉक्टर के खिलाफ ही जांच बैठा दी है। यह बात अपने आप में बेहद हैरान करने वाली है। पीएम मोदी और भाजपा ने एलजी को ट्रांसफर और पोस्टिंग का अधिकार इसलिए दे रखा है ताकि वह दिल्ली में महिलाओं का शोषण और उनके खिलाफ अपराध करने वाले लोगों को संरक्षण दे सकें। यह घटना दिल्ली के सरकारी अस्पताल में काम करने वाली एक महिला डॉक्टर के साथ हुई है। उस महिला डॉक्टर का कई बार यौन शोषण किया गया। लेकिन शिकायत के बाद भी एलजी और स्वास्थ्य विभाग के अफसरों ने कोई कार्रवाई नहीं की।

उन्होंने कहा कि एक महिला डॉक्टर ने अपने एमएस के खिलाफ यौन शोषण का आरोप लगाया और इसकी शिकायत करने के लिए दिल्ली के स्वास्थ्य सचिव दीपक कुमार से कई बार मिलने की कोशिश की। अक्टूबर 2023 में उस महिला ने शिकायक की और चार महीने धक्के खाने के बाद उस मामले में एक इंटरनल कमेटी बनाई गई। दिल्ली का स्वास्थ्य सचिव उस महिला डॉक्टर से नहीं मिला। महिला डॉक्टर इधर-उधर धक्के खाती रही, लेकिन सचिव ने मेडिकल सुप्रिटेंडेंट के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। उसके खिलाफ कोई एफआईआर तक नहीं दर्ज कराई। लेकिन जिस एमएस की गिरफ्तारी होनी चाहिए, जिसे जेल भेजना चाहिए उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। चार महीने के लंबे प्रयास के बाद उस महिला डॉक्टर के मामले की जांच के लिए एक कमेटी बनाई जाती है। इसके बाद फरवरी

महीने में उसके यौन शोषण से संबंधी जांच कमेटी बनती है और मार्च में उसी महिला डॉक्टर जिसने आरोप लगाया और सारे सबूत दिए, उसी के खिलाफ किसी पुराने मामले में जांच शुरु कर दी गई।

उन्होंने बताया कि ये लोग शिकायतकर्ता का शोषण कर रहे हैं, उसपर दबाव बना रहे हैं। उस महिला डॉक्टर का मानसिक उत्पीड़न कर रहे हैं। इन्होंने महिला के खिलाफ ही जांच शुरु कर दी। लेकिन वह महिला डॉक्टर झुकी नहीं और अपने आरोपों पर कायम रही। उसने आंतरिक जांच कमेटी के सामने सारे सबूत दिए। सारे प्रमाण और सबूत मिलने के बाद मई 2024 में एमएस के खिलाफ सारे आरोप सही पाए गए। यानि महिला डॉक्टर जिस पर आरोप लगा रही थी, उसने उसका यौन शोषण किया था। यह आंतरिक जांच कमेटी की जांच में सही पाया गया। कायदे से इसके बाद उस मेडिकल सुप्रिटेंडेंट की गिरफ्तारी होनी चाहिए। उसके खिलाफ एफआईआर होनी चाहिए।। लेकिन एलजी द्वारा अब तक कोई कार्रवाई की नहीं गई है।

संजय सिंह ने भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी से पूछा कहा कि क्या उन्होंने ट्रांसफर पोस्टिंग का अधिकार अपने एलजी को इसलिए दिया है, ताकि वह महिलाओं का शोषण करने वालों को बचा सकें और महिला डॉक्टर की शिकायत पर एक साल तक शांति से बैठे रहें? क्या उन्होंने यहां स्वास्थ्य सचिव दीपक कुमार को इसलिए बैठा रखा है कि जब महिला डॉक्टर उनसे मिलने जाए, तो वह उनसे न मिले और हफ्तों तक उसे दौड़ाता रहे? क्या इन्होंने स्वास्थ्य सचिव को इसलिए बैठा रखा है ताकि वह महिला डॉक्टर के खिलाफ ही जांच शुरू कर दे? क्या एलजी दिल्ली में भी कोलकाता जैसी घटना दोहराना चाहते हैं? क्या वह दिल्ली में भी कोलकाता जैसी घटना के घटने का इंतजार कर रहे हैं? उस मेडिकल सुपरिटेंडेंट पर एक नहीं, कई महिलाओं के यौन शोषण का आरोप है। ऐसे व्यक्ति को दिल्ली का एलजी बचा रहा है और दिल्ली का स्वास्थ्य सचिव भी उसे संरक्षण दे रहा है। भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसे अपराधियों को बचाने के लिए ऐसे एलजी और अधिकारियों को पद पर बनाए रखा है।

उन्होंने कहा कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के सारे नियमों की धज्जियां उड़ाई गईं है। जब महिला डॉक्टर ने अपने एमएस के खिलाफ शिकायत की, तो उसका ट्रांसफर कर दिया गया और उसके ट्रांसफर के आदेश में साफ-साफ लिखा गया कि उन्होंने यौन शोषण का आरोप लगाया है। इसलिए उनका ट्रांसफर किया जा रहा है। यानी, वह डॉक्टर जिस भी अस्पताल में गईं, वहां पूरे अस्पताल को पता चल गया। उसकी बेइज्जती हुई कि यह वही डॉक्टर है, जिसने यौन शोषण का आरोप लगाया है। अगर हम इस मामले की गहराई में जाएं, तो यह बात बहुत हैरान करने वाली है कि एक अस्पताल का एमएस लंबे समय से वहां काम करने वाली महिला डॉक्टर का शोषण करता रहा। उन्होंने कहा कि इस मामले में स्वास्थ्य सचिव दीपक कुमार को बर्खास्त किया जाना चाहिए और यौन शोषण करने वाले एमएस को गिरफ्तार कर तत्काल जेल भेजा जाना चाहिए। अगर दिल्ली के एलजी में जरा भी नैतिकता बाकी है, तो उन्हें अपने पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। एलजी को बताना चाहिए कि वह एक महिला डॉक्टर के यौन शोषण के मामले में एक साल तक खामोश कैसे रहे? भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी, जिन्होंने इस एलजी को नियुक्त किया है, उन्हें भी इसका जवाब देना चाहिए।

यति नरसिंहानंद के खिलाफ भड़काऊ पोस्ट करना पड़ा भारी, केस दर्ज कर तलाश रही यूपी पुलिस

परिवहन विशेष न्यूज

यति नरसिंहानंद के खिलाफ इंस्टाग्राम पर भड़काऊ पोस्ट करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। पोस्ट में यति की गिरफ्तारी को लेकर टिप्पणी की गई है और अधिक से अधिक शेयर करने का आह्वान किया गया है। पुलिस शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अलर्ट है और इंटरनेट मीडिया पर निगरानी रख रही है।

गाजियाबाद। जिले के डासना मंदिर के यति नरसिंहानंद के खिलाफ शनिवार को इंस्टाग्राम पर भड़काऊ पोस्ट की गई। पुलिस ने मामले में संज्ञान लेते हुए तुरंत केस दर्ज कर लिया है। पोस्ट में यति की गिरफ्तारी को लेकर टिप्पणी की गई है।

पोस्ट स्टोरी पर लगाकर अधिक से अधिक शेयर करने का आह्वान किया है। पुलिस केस दर्ज कर आरोपी की तलाश में जुट गई है।

शांति व्यवस्था के लिए पुलिस अलर्ट

यति नरसिंहानंद के भाषण को लेकर जिले की शांति व्यवस्था प्रभावित ना हो, इसको देखते हुए पुलिस अलर्ट मोड़ पर है। लगातार पुलिस इंटरनेट मीडिया पर निगरानी रख रही है। भड़काऊ पोस्ट व कमेंटबाजी पर निगरानी रखी जा रही है। संदिग्धों पर भी पुलिस नजर बनाए हुए हैं।

गिरफ्तारी और फांसी का फोटो

शुक्रवार को इंस्टाग्राम पर मछरी कादिर के नाम के अकांउट से यति को लेकर पोस्ट की गई। इसमें यति की गिरफ्तारी व फांसी को लेकर फोटो प्रसारित किया गया था। इस पर लिखा था कि भाइयों इसे अधिक से अधिक प्रसारित किया जाए। पोस्ट पर जंग थी और जंग है गाना भी लगाया गया है।

पुलिस दो आरोपियों की तलाश कर रही

मामला पुलिस के संज्ञान में आया तो छानबीन शुरू की गई। आरोपी भोजपुर थाना क्षेत्र के मछरी गांव का निकला। दारोगा पूरनसिंह की शिकायत पर भोजपुर थाने में तत्काल केस दर्ज हुआ। इतना ही नहीं, इसी पोस्ट को समीर मोदीनगर नाम के अकांउट से भी प्रसारित किया गया। पुलिस इसकी भी कुंडली खंगाल रही है।

एसीपी मोदीनगर ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि केस दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। किसी सूरत में शांतिव्यवस्था को प्रभावित करने की कोशिश करने वालों को बक्शा नहीं जाएगा। पुलिस लगातार निगरानी रख रही है।

तीन नेताओं पर साजिश का आरोप

डासना देवी मंदिर पर तीन राजनेताओं ने पर्दे के पीछे से हमले की साजिश रची थी। उन्होंने ही लोगों को मंदिर पर हमले के लिए उकसाते हुए मौके पर भेजा था। पुलिस को इस मामले में इनपुट इंटेलिजेंस मिले हैं, पुलिस इस मामले में तीनों के खिलाफ साक्ष्य जुटा रही है, जिससे कि उन पर कड़ी कार्रवाई की जा सके।

डासना देवी मंदिर के बाहर 50 पुलिसकर्मी तैनात

इसके अलावा एनआरसी, सीएए के प्रकरण में जिन 250 लोगों के खिलाफ गाजियाबाद में मुकदमे दर्ज हुए थे, उनकी भी निगरानी शुरू कर दी गयी है। जिससे कि वो लोग माहौल न खराब कर सकें। वहीं, इस वक्त डासना देवी मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गयी है। पहले यहां पर 25 पुलिसकर्मी तैनात रहते थे, अब यहां पर 50 पुलिसकर्मी तैनात कर दिए गए हैं।

नोएडा की फेमस यूनिवर्सिटी में 2 गुटों में फायरिंग, एक छात्र को लगी गोली; वजह आई सामने

नोएडा के सेक्टर 125 स्थित एक निजी विश्वविद्यालय में दो गुटों के बीच गोलीबारी की घटना में एक छात्र घायल हो गया। दोनों पक्षों के बीच पहले से किसी बात को लेकर विवाद चल रहा था और वे समझौते के लिए आए थे। बात नहीं बनने पर कहासुनी हुई और एक युवक ने गोली चला दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नोएडा। नोएडा शहर के सेक्टर 125 स्थित रेड लाइट पर दो पक्षों में कहासुनी हो गयी। एक पक्ष ने गोली चला दी। दूसरे पक्ष के एक युवक की जांघ में गोली लग गयी। दोनों ही पक्ष 125 स्थित निजी यूनिवर्सिटी के छात्र बताए जा रहे हैं और दोनों पक्ष आपसी विवाद को लेकर समझौते के लिए आये थे।

बात नहीं बनने पर घटना हुई। घायल युवक का उपचार चल रहा। पुलिस ने स्वजन की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। चार टीम आरोपितों की तलाश में जुटी हैं। चर्चा है कि घटना यूनिवर्सिटी परिसर में कहासुनी और गोली चलने की घटना गेट पर हुई।

गोली लगने वाले युवक की हुई पहचान

डीसीपी नोएडा रामबदन सिंह ने बताया कि गोली लगने वाले युवक को पहचान सलालरपुर के गौरीश भाटी के रूप में हुई है। दो पक्षों में विवाद चल रहा है। दोनों पक्ष समझौते के लिए आये थे। बात नहीं बनने पर कहासुनी हो गई। पुलिस ने आगे बताया कि इस मामले की उचित जांच जारी है। इसी बीच प्रदीप नाम के युवक ने गोली चला दी। उधर, चिकित्सकों का कहना है कि गोली छात्र की जांघ में लगी है और वह खतरे से बाहर है। पहले भी भिड़ चुके हैं युवक जानकारों की मानें तो दोनों पक्ष पहले भी एक-दूसरे से भिड़ चुके हैं।

मई माह में भी नोएडा स्थित यूनिवर्सिटी का वीडियो हुआ था वायरल

बीते दिनों ही यूनिवर्सिटी का एक वीडियो वायरल हुआ था। छात्रों के दो गुटों के बीच मारपीट हुई थी। उधर पुलिस की ओर से यूनिवर्सिटी प्रबंधन को भी घटना की जानकारी दे दी गई है। इस प्रकार की घटना पहले भी नोएडा स्थित यूनिवर्सिटी से सामने आ चुकी है। जहां पर इसी साल मई महीने में विश्वविद्यालय एक बार जंग का अखाड़ा बनी नजर आई। छात्रों के दो गुट में बीच खेल के दौरान मारपीट हो गई।

हाथापाई भी ऐसी हुई जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जंकर वायरल हुआ। लोगों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर नोएडा पुलिस से शिकायत भी की थी। सेक्टर-126 थाना पुलिस ने मामले की जांच की। सोशल मीडिया पर वायरल 10 सेकंड के इस वीडियो में यूनिवर्सिटी कैंपस में 7-8 छात्र एक छात्र को बुरी तरह से पीटते हुए दिखाई दिए। कुछ छात्र लात-घूसों से तो कुछ हॉकी से पिटाई करते हुए दिखाई दिए।

बिजली बोर्ड में लगी आग पटाखों तक पहुंची, फिर होने लगे धमाके... सिलेंडर ने बिगाड़ा खेल और गई एक जान

नोएडा के सेक्टर-27 स्थित एक चार मंजिला अपार्टमेंट में पटाखों से आग लगने और सिलेंडर फटने से एक महिला की मौत हो गई। आग बुझाने के लिए दमकल की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और किसी तरह आग पर काबू पाया। इस हादसे में कई लोग घायल भी हुए हैं। घायलों का प्राथमिक इलाज कर उन्हें घर भेज दिया गया।

नोएडा। दिल्ली से सटे नोएडा के सेक्टर-20 थाना क्षेत्र के सेक्टर-27 स्थित चार मंजिला अपार्टमेंट में भयावह हादसा हो गया जिसमें एक महिला की मौत हो गई और एक की हालत गंभीर है। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार रात साढ़े आठ बजे प्रथम तल पर पटाखे से आग लग गई और फिर सिलेंडर फटने से तेज धमका हुआ। आग बुझाने के लिए दमकल की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और किसी तरह आग पर काबू पाया। दूसरे तल रहने वाली एक महिला की मौत हो गई, जबकि दूसरी की हालत गंभीर है।

बिजली के बोर्ड में लगी आग

डीसीपी नोएडा रामबदन सिंह ने बताया कि सेक्टर-27, एफ-95 पुष्पा देवी के मकान में भूतल पर राजीव, प्रथम तल पर देव, दूसरे तल पर नर्स नम्रता व तीसरे तल पर अर्पित किराये पर रहते हैं।

आग प्रथम तल पर देव सिंह के मकान में बिजली के बोर्ड में आग लग गयी। आग फैली तो पास में रखे पटाखे इसकी जद में आ गए और पटाखों से फैली आग ने विकराल रूप धारण कर लिया।

इसी बीच सिलेंडर फटने से तेज धमाका हुआ, जिससे अपार्टमेंट में धुंआ भर गया। हर किसी ने भागकर और कूदकर जान बचाई लेकिन दूसरे तल पर गौरखपुर की नम्रता और उनकी चेचेरी बहन श्वेता फंसे रहे।

आग बुझाने पर दोनों अपने घर मे बेहोशी की अवस्था में मिले। अस्पताल ले जाने पर चिकित्सकों ने श्वेता को मृत घोषित कर दिया जबकि नम्रता का उपचार जारी है। अस्पताल में एक दंपति और उनका बच्चा चोटिल अवस्था में जिला अस्पताल पहुंचे। तीनों का उपचार किया गया और प्राथमिक उपचार के बाद तीनों को घर भेज दिया गया।

यूं ही नहीं बन गए थे अब्दुल कलाम मिसाइलमैन, पद्म विभूषण रतन टाटा का था अहम रोल

परिवहन विशेष न्यूज

देश के मशहूर बिजनेसमैन पद्म विभूषण रतन टाटा का बीती रात देहांत हो गया। पिछले कुछ दिनों से बीमार होने की वजह से उन्हें मुंबई के कैंडी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। जहां पर उन्होंने अंतिम सांस ली। देशभर के तमाम हस्तियों ने रतन टाटा को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। कहा जाता है कि पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को मिसाइलमैन बनाने में रतन टाटा की अहम भूमिका थी।

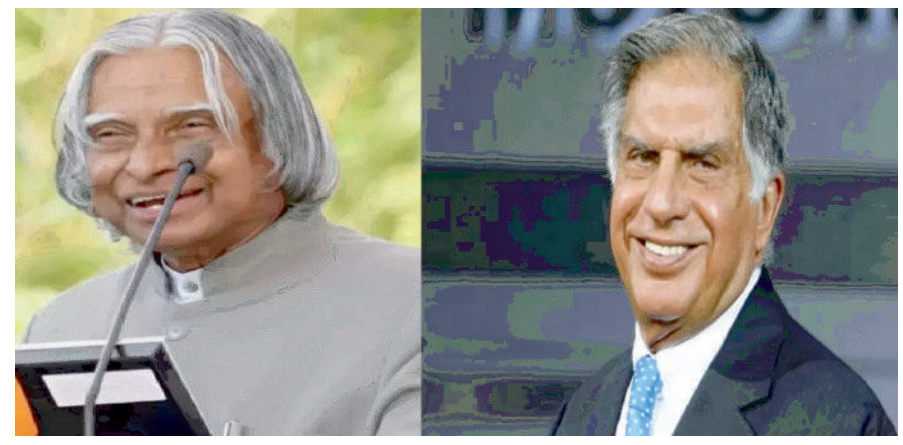

गुरुग्राम। पूरी दुनिया देश के पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डा. एपीजे अब्दुल कलाम को मिसाइलमैन के रूप में भी जानती है। उन्हें यह ख्याति दिलाने में प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा ने विशेष भूमिका निभाई थी।

रतन टाटा के सहयोग से मिसाइल बनाने के ऊपर तेजी से काम शुरू हुआ और कुछ ही साल के भीतर देश मिसाइलों से लैस राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल हो गया। डा. कलाम अपने भाषणों के दौरान अक्सर रतन टाटा के योगदान की चर्चा किया करते थे।

अब्दुल कलाम ने रतन टाटा के साथ सेना भवन में की मीटिंग

बात 1993 के दौरान की है। रतन टाटा कुछ समय पहले ही टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के चेयरमैन बने थे। उस समय डा. कलाम एसए टू आरएम यानी साइंटिफिक एडवाइजर टू रक्षा मंत्री थे। उनकी देखरेख में डीआरडीओ के कई केंद्र में मिसाइल बनाने के ऊपर काम चल रहा था।

अलग-अलग केंद्र पर अलग-अलग पार्ट बनाए जा रहे थे। काम बहुत धीमी गति से चल रहा था। कई जगह काम चलने से आसानी से पता नहीं चल पा रहा था कि कहां पर कितना काम हुआ है। इससे डा. कलाम बहुत परेशान थे। वह प्रतिदिन कार्यों की रिपोर्ट लेना चाहते थे ताकि जल्द से जल्द मिसाइल तैयार हो सके। उन्होंने रतन टाटा के साथ सेना भवन में मीटिंग तय की।

सॉफ्टवेयर बनने से मिसाइल बनाने की प्रक्रिया में आई तेजी

रतन टाटा अपनी कंपनी टीसीएस के तत्कालीन दिल्ली हेड फिरोज वंद्रेवाला एवं कंसल्टेंट प्रदीप यादव के साथ डा. कलाम से मीटिंग करने के लिए सेना भवन पहुंचे। मीटिंग में डा. कलाम ने अपनी परेशानी बताई। इस पर रतन टाटा ने कहा कि इस समस्या का समाधान एक ऐसा सॉफ्टवेयर हो सकता है, जो सभी जगह की रिपोर्ट कम्पाइल कर प्रस्तुत कर सके।

डा. कलाम ने रतन टाटा से सॉफ्टवेयर तैयार कराने को कहा। सॉफ्वेयर तैयार हुआ और प्रतिदिन की रिपोर्ट सामने आने लगी। इसका लाभ यह हुआ कि देश में तेजी से मिसाइल बनने लगे और कुछ ही साल के भीतर देश मिसाइलों से लैस हो गया। अपनी यादों की गठरी खोलते हुए वर्तमान में आईटी एवं टेलीकॉम सेक्टर की कंपनियों के संगठन हाइटेक इंडिया के प्रेसिडेंट प्रदीप यादव कहते हैं कि वह सेना भवन में टीसीसी की ओर से मिसाइल प्रोजेक्ट के को-ऑर्डिनेटर भी थे।

हमेशा अपने कर्मचारियों का करें सम्मान-रतन टाटा

डा. कलाम एवं रतन टाटा (Ratan Tata) की एक मीटिंग ने देश को रक्षा के क्षेत्र में ऊंचाई प्रदान कर दी। दोनों दिन-रात देश के लिए सोचते थे। दोनों सरल और सौम्य थे। एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। रतन टाटा कहा करते थे कि किसी भी कंपनी का अमूल्य धन उसके कर्मचारी होते हैं।

यदि कर्मचारी के ऊपर भरोसा किया जाए तो वे हर ऊंचाई तक पहुंचा सकते हैं। इसलिए हमेशा अपने कर्मचारियों का सम्मान करना चाहिए। कर्मचारियों का सम्मान करने वाला ही उनके दिलों पर राज कर सकता है।

'तिरंगा उठाने वाला कोई नहीं बचेगा', कहने वाली महबूबा की पार्टी का झंडा उठाने वाला कोई नहीं बचा

नीरज कुमार दुबे

महबूबा मुफ्ती ही वही शख्स हैं जिन्होंने कहा था कि यदि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया गया तो राज्य में तिरंगा उठाने वाला कोई नहीं होगा। लेकिन अब स्थिति यह है कि जम्मू-कश्मीर में हर हाथ में तिरंगा है और महबूबा की पार्टी का झंडा उठाने वाला कोई नहीं है।

पहले इस साल हुए लोकसभा चुनावों में और अब जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) को जो झटका लगा है उसके चलते इस पार्टी के अस्तित्व पर ही खतरा मंडराने लगा है। देखा जाये तो अपने संस्थापक मुफ्ती मोहम्मद सईद के निधन के बाद से पीडीपी एक भी जीत हासिल नहीं कर पाई है। मुफ्ती मोहम्मद सईद के बाद उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती ने पार्टी और सरकार की कमान तो संभाली लेकिन ना वह सरकार चला पाईं ना ही अपनी पार्टी को आगे बढ़ा पाईं। महबूबा मुफ्ती के पास कितना राजनीतिक कौशल है इसका अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि मुफ्ती मोहम्मद सईद के साथ वर्षों तक काम कर चुके कई बड़े नेता पीडीपी छोड़ चुके हैं। इसके अलावा, इस साल हुए लोकसभा चुनावों में महबूबा मुफ्ती अनंतनाग-राजौरी सीट से चुनाव हार गयीं और अब उनकी बेटी इल्तिजा मुफ्ती दक्षिण कश्मीर की बिजबेहरा सीट से चुनाव हार गयीं। यही नहीं, महबूबा ने अपने भाई तस्सदुक हुसैन मुफ्ती को भी राजनीति में स्थापित करने का प्रयास किया लेकिन विफल रहीं।

हम आपको याद दिला दें कि महबूबा मुफ्ती ही वही शख्स हैं जिन्होंने कहा था कि यदि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया गया तो राज्य में तिरंगा उठाने वाला कोई नहीं होगा। लेकिन अब स्थिति यह है कि जम्मू-कश्मीर में हर हाथ में तिरंगा है और महबूबा की पार्टी का झंडा उठाने वाला कोई नहीं है। इस बार महबूबा मुफ्ती ने जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाने या किंगमेकर बनने के उद्देश्य से चुनाव लड़ा था लेकिन जनता ने उनकी किसी उम्मीद को पूरा नहीं होने दिया। जनता ने जिस तरह पीडीपी के गढ़ माने जाने वाले बिजबेहरा में महबूबा की बेटी को करारी शिकस्त दी है वह दर्शाता है कि कट्टरपंथियों और आतंकवाद के प्रति नरम रुख अपनाने वालों के दिन अब राजनीति में लद चुके हैं। हम आपको याद दिला दें कि चुनावों के बीच ही महबूबा ने प्रतिबंधित संगठन जमात-ए-इस्लामी पर से प्रतिबंध हटाने की मांग की थी। चुनावों के दौरान एक तरह से अलगाववादियों को उनका खुला समर्थन साफ नजर आ रहा था लेकिन जनता ने किसी भी अलगाववादी को विधानसभा नहीं पहुँचने दिया।

वर्ष 2016 से 2018 तक मुख्यमंत्री रहीं महबूबा ने इस बार चुनाव नहीं लड़ा था। उनकी बेटी इल्तिजा मुफ्ती अपने पहले विधानसभा चुनाव में श्रीगुफवारा-बिजबेहरा सीट से हार गईं। महबूबा को उम्मीद थी कि उनकी पार्टी पीडीपी क्षेत्रीय राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिए पर्याप्त सीट जीतेगी। वैसे पार्टी की उम्मीदें कम होने का संकेत इल्तिजा ने चुनाव से पहले ही दे दिया था जब उन्होंने कहा था कि ''पीडीपी किंगमेकर होगी'' क्योंकि चुनाव में त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति बनेगी। पीडीपी की इस करारी हार पर इल्तिजा मुफ्ती ने कई कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। उनका कहना है कि हमारे 25 विधायक, दो राज्यसभा सदस्य और कई मंत्री पार्टी से चले गए और उनके साथ ही हमारे कार्यकर्ता भी पार्टी छोड़कर चले गए। उनका कहना है कि हमारी पार्टी पर हुआ यह हमला इस हार का सबसे बड़ा कारण है। हम आपको बता दें कि इस बार के विधानसभा चुनाव में पीडीपी ने कुल 84 सीटों पर चुनाव लड़ा था जिनमें से उसे मात्र तीन सीटों पर जीत मिली है। पीडीपी का यह प्रदर्शन दर्शा रहा है कि महबूबा अपने पिता की पार्टी को रसातल में पहुँचा चुकी हैं।

देखा जाये तो आतंकवादियों के जनाजे में शामिल होती रहीं महबूबा मुफ्ती के परिवार की वजह से ही जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद बढ़ा लेकिन इन लोगों ने हमेशा आतंकवादियों का बचाव किया और उनके प्रति नरम रुख बनाये रखा। हम आपको याद दिला दें कि मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी और महबूबा मुफ्ती की बहन रुबैया सईद जब 1989 के अपने अपहरण से जुड़े मामले में साल 2022 में सीबीआई की विशेष अदालत के समक्ष पेश हुई थीं तो उस दौरान उन्होंने सिर्फ जेकेएलएफ प्रमुख यासीन मलिक की पहचान अपने अपहरणकर्ताओं के रूप में की। उन्होंने किसी अन्य को नहीं पहचाना था। इस पर महबूबा ने कहा था कि लंबा वक्त बीत जाने पर लोग बहुत कुछ भूल जाते हैं। हम आपको याद दिला दें कि 1989 में अपहरणकर्ताओं ने उन्हें पांच आतंकवादियों की रिहाई के बदले रिहा किया था। 1990 के दशक की शुरुआत में इस मामले की जांच सीबीआई को सौंपी गई थी। रुबैया का अपहरण घाटी के अस्थिर इतिहास की एक प्रमुख घटना माना जाता है। उनकी आजादी के बदले जेकेएलएफ के पांच सदस्यों की रिहाई को आतंकी समूहों का मनोबल बढ़ाने वाले कदम के रूप में देखा गया था, जिन्होंने उस समय सिर उठाना शुरू किया था। रुबैया को आठ दिसंबर 1989 को श्रीनगर के लाल डेड अस्पताल के पास से अगवा कर लिया गया था। 13 दिसंबर 1989 को केंद्र की तत्कालीन वीपी सिंह सरकार द्वारा पांच आतंकियों को रिहा किए जाने के बाद अपहरणकर्ताओं ने उन्हें रिहा कर दिया था।

हम आपको बता दें कि विधि स्नातक 56 वर्षीय महबूबा ने 1996 में अपने पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद के साथ कांग्रेस में शामिल होकर राज्य की मुख्यधारा की राजनीति में प्रवेश किया था। यह वह समय था जब आतंकवाद अपने चरम पर था। वह पूर्ववर्ती जम्मू-कश्मीर राज्य की पहली और अंतिम महिला मुख्यमंत्री थीं। 65 वर्षीय पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने अपनी पार्टी को पुनर्जीवित करने की उम्मीद में उम्मीदवारों के लिए सक्रिय रूप से प्रचार किया था लेकिन जनता ने उनकी बात नहीं सुनी। वैसे वर्ष 1996 में अपने पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद के साथ राजनीति में आईं महबूबा ने पीडीपी को एक क्षेत्रीय राजनीतिक शक्ति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसने न केवल नेशनल कॉन्फ्रेंस का मुकाबला किया बल्कि क्षेत्र की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी को उसके गठन के चार साल के भीतर सत्ता से बाहर कर दिया था। वर्ष 2002 में 16 सीटें जीतने वाली पीडीपी के विधायकों की संख्या 2008 में 21 और 2014 के विधानसभा चुनाव में 28 हो गई थी। महबूबा चार बार विधायक रह चुकी हैं। उन्होंने 1996, 2002, 2008 के आम चुनाव और 2016 के उपचुनाव में जीत दर्ज की। वह 2004 और 2014 के चुनाव में लोकसभा के लिए चुनी गई थीं।

बहरहाल, अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रही पीडीपी को चाहिए कि वह अपनी सोच और नीतियों में बदलाव लाये और देश के साथ खड़ी हो। पीडीपी को देखना चाहिए कि जिस पाकिस्तान से बातचीत की वह बार-बार हिमायत करती है उसने इस बार के चुनाव में पीडीपी का नहीं बल्कि नेशनल कांफ्रेंस का समर्थन कर दिया था। देखा जाये तो इसे ही कहते हैं ना घर के रहे ना घाट के।

- :सौजन्य :-

ईवी ड्राइव द फ्यूचर

EV Drive the Future

भोपाल स्मार्ट सिटी ने शुरू किया संत हिरदाराम नगर में ईवी चार्जिंग स्टेशन, एक साथ चार्ज होंगे तीन वाहन

परिवहन विशेष न्यूज

स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने संत हिरदाराम नगर में गुरुवार को ईवी व्हीकल्स के लिए ईवी चार्जिंग स्टेशन का शुभारंभ किया। इस चार्जिंग स्टेशन में एक साथ तीन वाहनों को चार्ज किया जा सकेगा। चार्जिंग स्टेशन का शुभारंभ एसडीएम आदित्य जैन ने किया।

ईवी चार्जिंग स्टेशन संत हिरदाराम नगर में विसर्जन घाट के समीप स्थापित किया गया है। इस चार्जिंग स्टेशन में एक साथ 2 दुपहिया वाहन व 3 तीन पहिया वाहन चार्ज किए जा सकेंगे।

इसके लिए वाहन चालक को गूगल प्ले स्टोर से इंडस चार्ज एप डाउनलोड करना होगा, जिसमें चार्जिंग प्वॉईंट की उपलब्धता एवं चार्जिंग संबंधी अन्य जानकारियां मिल जाएंगी। इसके लिए एप में वाहन चालक को अपना नाम, पता एवं अन्य जानकारी देनी होगी। चार्जिंग सॉकेट पर एप से क्यू आर कोड स्केन करते ही वाहन की चार्जिंग प्रकिया प्रारंभ हो जाएगी। उक्त स्टेशन पीपीपी मोड पर स्थापित किया गया है।

चार्जिंग स्टेशन की क्षमता 9.9 किलोवाट की है। भोपाल स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने इसके अलावा स्मार्ट सिटी कार्यालय एमपी नगर, मल्टीलेवल पार्किंग एवं अन्य स्थानों पर भी ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। उक्त स्थानों पर फास्ट चार्जिंग स्टेशन बनाए जाएंगे। जिनसे जल्द ही नागरिकों को ई व्हीकल चार्जिंग के लिए सुविधाएं मिलने लगेंगी। कार्यक्रम में भोपाल स्मार्ट सिटी के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

पद्म विभूषण रतन टाटा की स्मृति में - सौजन्य : होर्माज्द सोराबजी द्वारा

परिवहन विशेष न्यूज

अपने पूरे जीवन में टाटा ने इस अदम्य, जुझारू भावना का परिचय दिया - चाहे वह टाटा स्टील की कमान संभालने के समय शक्तिशाली यूनियनों के खिलाफ़ मजबूती से खड़ा होना हो, अपने संगठन के उन क्षत्रपों से मुकाबला करना हो जो बदलाव का विरोध करते थे या प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़कर कोरस का अधिग्रहण करने के लिए जमकर संघर्ष करना हो, जो उस समय किसी भारतीय कंपनी द्वारा सबसे बड़ा विदेशी अधिग्रहण था। साइरस मिस्त्री के साथ कड़वे कानूनी झगड़े के दौरान उनकी दृढ़ता फिर से स्पष्ट हुई, जहाँ वे अंततः विजयी हुए। उन्होंने इन लड़ाइयों को शालीनता और दृढ़ संकल्प के साथ लड़ा, हर बार और मजबूत होते गए, यही वजह है कि 86 वर्ष की आयु में उनके निधन की खबर एक सदमा के रूप में आई और उम्मीद से बहुत पहले।

उनकी स्थायी उपस्थिति के बिना दुनिया की कल्पना करना कठिन है - एक ऐसे व्यक्ति जिनके लचीलेपन, दूरदर्शिता और दयालु नेतृत्व ने न केवल टाटा समूह को बल्कि भारतीय उद्योग के परिदृश्य को भी आकार दिया।

उन्होंने 1991 से 2012 तक टाटा समूह का नेतृत्व किया, जो भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दौर था, क्योंकि दशकों के आर्थिक अलगाव के बाद देश दुनिया के लिए खुला था। भारत के विशाल बाजार में प्रवेश करने के लिए उत्सुक बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ज्वार की लहर के खिलाफ 'बॉम्बे क्लब' के संरक्षणवादी दृष्टिकोण को अपनाने के बजाय, टाटा ने प्रतिस्पर्धा को अपनाया। उन्होंने न केवल भारत के भीतर विदेशी प्रतिद्वंद्वियों का मुकाबला किया, बल्कि विदेशों में भी आक्रामक रूप से विस्तार किया। उनके दूरदर्शी नेतृत्व में, कॉफी से लेकर कारों तक का समूह घरेलू उद्योग के नेता से वैश्विक शक्ति के रूप में विकसित हुआ, जिसने जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर), कोरस और टेटली टी जैसे प्रतिष्ठित ब्रांडों का अधिग्रहण किया।

अपने लंबे और शानदार करियर में पद्म विभूषण रतन टाटा को उनकी सभी उपलब्धियों के लिए सम्मानित और विश्व स्तर पर मान्यता दी गई है, जिन्होंने चेयरमैन के रूप में उनके 21 साल के शानदार करियर के दौरान टाटा समूह को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया और यह बताना मुश्किल है कि उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया जो सबसे बड़ा परिवर्तनकारी था।

लेकिन अगर मुझे टाटा की सबसे बड़ी उपलब्धि चुननी पड़े, तो वह इंडिका होगी। यह उनकी पहली कार थी, जिसने टाटा मोटर्स को मुख्यधारा की यात्री कार के क्षेत्र में पहुंचा दिया। यह साधारण हैचबैक उनका सबसे बड़ा जुआ था क्योंकि अगर यह विफल हो जाती, तो टाटा मोटर्स शायद सिर्फ़ ट्रक बनाने तक ही सीमित रहती।

मैं टाटा द्वारा लिए गए एक महत्वपूर्ण निर्णय से अवगत था - जो इंडिका की सफलता के लिए महत्वपूर्ण था। इसने वास्तव में प्रदर्शित किया कि वह कितने दूरदर्शी थे। एक दोपहर बॉम्बे हाउस में अपने चौथी मंजिल के कार्यालय में मुझसे बात करते हुए, उन्होंने एक पुराना लिफाफा खोला और मुझे एक उदास दिखने वाली हैचबैक की तस्वीर दिखाई। ₹यह क्या है ?₹ मैंने पूछा। ₹यह इंडिका है जिसे ईआरसी ने डिज़ाइन किया है,₹ उन्होंने जवाब दिया, इन-हाउस डिज़ाइन के प्रयास पर मेरे अत्यधिक आश्चर्य से चकित, जो पहियों पर एक बॉक्स की तरह दिख रहा था। एक ऐसी कंपनी के लिए जो केवल ट्रकों को डिज़ाइन करने के लिए अभ्यस्त थी, कोई भी इससे बेहतर की उम्मीद नहीं कर सकता था। सबसे कम, खुद चेयरमैन।

टाटा को जल्दी ही यह एहसास हो गया कि भारत में एक क्रांतिकारी कार डिजाइन करने की प्रतिभा नहीं है, और उस समय एक साहसी और साहसिक कदम उठाते हुए उन्होंने अपनी अनुसंधान एवं विकास टीम द्वारा तैयार किए गए रेखाचित्रों को फाड़ दिया और संपूर्ण डिजाइन और स्टाइलिंग का काम आई.डी.ई.ए को सौंप दिया, जो एक इतालवी कंपनी है और लैंसिया डेल्टा जैसे विश्व स्तरीय डिजाइनों के लिए जानी जाती है।

1990 के दशक के मध्य में ऑटो उद्योग तीन दशकों के अलगाव से अभी-अभी मुक्त हुआ था और टाटा के अलावा किसी के पास सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए विदेश जाने की दूरदर्शिता नहीं थी और यह सस्ता भी नहीं था। आई.डी.ई.ए का बिल 72 करोड़ रुपये था - उत्पादन के लिए एक कार को डिज़ाइन और विकसित करने के लिए एक खगोलीय राशि, लेकिन यह कितना भुगतान किया गया।

जब इंडिका को आखिरकार 1998 के दिल्ली ऑटो एक्सपो में पेश किया गया तो इसने अपने शानदार लुक के साथ पूरी तरह से सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। वास्तव में स्टाइलिंग ने आधी लड़ाई जीत ली थी और इसने तमाम बाधाओं और गुणवत्ता संबंधी मुद्दों के बावजूद इसकी अभूतपूर्व सफलता में बहुत बड़ा योगदान दिया। इंडिका ने वैश्विक उद्योग को हिलाकर रख दिया और विशेष रूप से फिएट को, जिसकी बहुचर्चित 'विश्व कार', पालियो हैचबैक, जो एक साल बाद भारत में लॉन्च होने वाली थी, 1998 के जिनेवा अंतर्राष्ट्रीय मोटर शो में जब दोनों कारों ने अपना वैश्विक डेब्यू किया, तो वह पूरी तरह से पीछे रह गई। पालियो इंडिका की सीधी प्रतिद्वंद्वी थी और उसके आकार भी लगभग समान थे और यह आश्चर्यजनक नहीं था क्योंकि पालियो को भी आई.डी.ई.ए. ने ही डिजाइन किया था।

फिएट के तत्कालीन सीईओ पाओलो कैंटरेला ने गुस्से में आकर आई.डी.ई.ए को बर्खास्त कर दिया और इतालवी फर्म पर पालियो अवधारणा की नकल करने का आरोप लगाया। उन्होंने आई.डी.ई.ए को अदालत में भी घसीटा। कानूनी मुद्दों और अपने सबसे बड़े ग्राहक फिएट को खोने के बाद, आई.डी.ई.ए बंद होने के कगार पर थी। यही वह समय था जब रतन टाटा की करुणा चमक उठी। उन्होंने आई.डी.ई.ए के प्रमुख टीम सदस्यों को जीवनदान दिया, जो वास्तव में, ट्रिलिक्स नामक एक अलग कंपनी के माध्यम से टाटा के लिए एक डिजाइन प्रभाग बन गए, जिसमें टाटा मोटर्स ने अंततः 80 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीद ली। यह केवल दान का कार्य नहीं था बल्कि एक चतुर चाल थी क्योंकि इसने पूर्व आई.डी.ई.ए टीम से अटूट वफादारी पैदा की वास्तव में, आखिरी बार मैंने श्री टाटा से कुछ सप्ताह पहले बात की थी और उन्हें नोरेक के निधन की सूचना दी थी, जिनके साथ उन्होंने नैनो के डिजाइन के दौरान बहुत निकटता से काम किया था।

डिजाइन और स्टाइलिंग संभवतः टाटा मोटर्स में टाटा की सबसे बड़ी विरासतों में से एक है। एक योग्य वास्तुकार टाटा के पास एक अद्भुत सौंदर्य बोध था, जो आज तक, हर टाटा कार के डिजाइन और आकार को परिभाषित करता है। 'कम ही अधिक है' दृष्टिकोण - रूप की सादगी और एक शानदार अपील - यही वह चीज है जो टाटा कारों को परिभाषित करती है, जो अभी भी बड़े पैमाने पर बाजार के खिलाड़ियों के बीच डिजाइन के मामले में स्वर्ण मानक हैं। और उनके कार्यकाल के दौरान टाटा की कारें हमेशा अपनी श्रेणी में सबसे अधिक विशाल होती थीं। नैनो को भी चार छह फुट के लोगों को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। क्यों? क्योंकि टाटा भी छह फुट के थे।

अपनी सभी सफलताओं के साथ-साथ निराशाएँ भी थीं। उन्होंने शुरुआती वर्षों में गुणवत्ता की कमी पर दुख जताया। 1998 में जिनेवा शो में एक साक्षात्कार में, उन्होंने बहुत ही संक्षेप में कहा, ₹गुणवत्ता केवल मशीनों और निवेशों से नहीं आती है; हमें दृष्टिकोण और मानसिकता पर काबू पाना होगा; यही चुनौतियाँ हैं।₹ सेवानिवृत्त होने से ठीक पहले, उन्होंने मुझे बताया कि निराशा की बात यह है कि टाटा मोटर्स वैश्विक खिलाड़ियों के साथ गुणवत्ता का स्तर नहीं बना पा रही है और उन्होंने यात्री कार प्रभाग के निवर्तमान अध्यक्ष राजीव दुबे द्वारा जाने से ठीक पहले कही गई बातें साझा कीं: ₹टाटा मोटर्स एक ट्रक कंपनी है, जिसके साथ यात्री कार व्यवसाय भी जुड़ा हुआ है।₹ मुझे लगा कि वे उन शब्दों से ग्रस्त थे; यह इस बात पर चोट करता है कि कंपनी की संस्कृति, जो ट्रक निर्माता के चरित्र में निहित है, में वह सब नहीं था जो दोषरहित उत्पाद देने के लिए आवश्यक था। टाटा मोटर्स ने वहाँ से बहुत लंबा सफर तय किया है, गुणवत्ता पहले से कई पायदान बेहतर है, लेकिन विश्वसनीयता हमेशा इसके लिए एक चलती लक्ष्य रही है।

नैनो टाटा की सबसे बड़ी निराशा थी। लाखों लोगों को उनकी पहली कार देने का उनका सपना बस यही रह गया। आप अवधारणा की शुद्धता पर दोष नहीं लगा सकते: एक ऐसे परिवार को सुरक्षित और किफ़ायती परिवहन देना जो अन्यथा दोपहिया वाहन से ज़्यादा कुछ नहीं खरीद सकता था। नैनो की शुरुआत मुश्किलों भरी रही, आखिरी समय में प्लांट को सिंगुर से साणंद ले जाया गया और आग लगने की घटनाओं ने कार में भरोसा कम कर दिया, लेकिन टाटा कार खरीदारों की आकांक्षाओं को समझने में विफल रहे, जो दुनिया की सबसे सस्ती कार के रूप में लेबल की गई किसी चीज़ में नहीं दिखना चाहते थे। फिर भी नैनो ने अन्य वैश्विक वाहन निर्माताओं को अपनी खुद की कम लागत वाली कारें बनाने के लिए प्रेरित किया और रेनॉल्ट के तत्कालीन बॉस कार्लोस घोसन ने स्वीकार किया कि क्रांतिकारी क्विड ₹नैनो से प्रेरित थी₹। टाटा की निराशा यह थी कि कंपनी में किसी ने भी नैनो का स्वामित्व नहीं लिया और न ही इसका समर्थन किया, बल्कि इसे लाभ में कमी के रूप में देखा, जो कि स्पष्ट रूप से था।

पिछले कुछ सालों में टाटा की असाधारण दूरदृष्टि और असाधारण आंतरिक अनुभूति के कई उदाहरण हैं, जिन्होंने टाटा मोटर्स को दूसरे स्तर पर पहुँचाया है। जेएलआर का अधिग्रहण संभवतः इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। टाटा ने तुरंत ही उस समृद्ध उत्पाद पाइपलाइन में संभावना को पहचान लिया, जिस पर फोर्ड ने अरबों खर्च किए थे और फिर उसे एक थाली में परोस दिया। उन्होंने जेएलआर को अपने अधीन बढ़ने और फलने-फूलने की आज़ादी दी, और कंपनी ने उतार-चढ़ाव का उचित हिस्सा देखा। फिर भी, यह टाटा मोटर्स के मुकुट का सबसे बड़ा रत्न है।

कारों के प्रति अपने जुनून से प्रेरित होकर टाटा ने अपना अधिकांश समय और ऊर्जा टाटा मोटर्स को समर्पित की, जिसे उन्होंने अकेले ही ट्रकों के निर्माता से एक पूर्ण विकसित वैश्विक ऑटोमोबाइल कंपनी में बदल दिया। यह आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि वह एक स्पष्ट 'कार आदमी' थे। उनके संग्रह में एक विविध मिश्रण है: एक फेरारी कैलिफोर्निया, एक आर129 मर्सिडीज 500 एसएल, एक कैडिलैक एक्सएलआर, 1960 के दशक की लिंकन टाउन कार जिसे जेएलआर डिजाइन बॉस गेरी मैकगवर्न की टीम ने शानदार ढंग से बहाल किया है और हां, बहुत सारी जगुआर और लैंड रोवर्स हैं। उनके चमचमाते संग्रह को, एक तहखाने में छुपा कर रखा गया है, जिसे शोरूम-ताज़ा से कम कुछ भी नहीं दिखने के लिए लाड़-प्यार दिया गया है। प्रत्येक कार का अपना बेस्पोक कवर होता है जो एक विशेष सामग्री से बना होता है जो पेंट को खरोंच नहीं करेगा और नमी को अंदर नहीं आने देगा। टाटा ने कई वर्षों से गाड़ी चलाना बंद कर दिया था, और मुझे नहीं पता कि उनके संग्रह का क्या हुआ, लेकिन मुझे यकीन है कि उन्होंने अपनी हर गाड़ी को सप्ताहांत में किसी न किसी को घुमाने के लिए रख लिया है।

अगस्त 2009 में एक बरसाती रविवार को टाटा के साथ उनकी फेरारी कैलिफोर्निया में यात्रा करना एक ऐसा अनुभव था जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। उन्होंने विनम्रतापूर्वक मुझसे अनुरोध किया कि मैं अपनी कार से फ्लोर मैट ले आऊं। कैलिफोर्निया में अपने खुद के फ्लोर मैट थे, लेकिन टाटा के लिए, वे भी मेरे गीले पैरों से गंदे होने के लिए बहुत अच्छे थे! उन्होंने V8 मोटर से शानदार गड़गड़ाहट सुनने के लिए थ्रॉटल को दबाया और मरीन ड्राइव पर बच्चों जैसी खुशी के साथ मुस्कुराते हुए छोटी-छोटी गति से आगे बढ़े। जिस बात ने मुझे चौंकाया वह यह थी कि कैलिफोर्निया में टाटा कितने सहज थे, जटिल स्टीयरिंग व्हील पर सभी सेटिंग्स के साथ खेलते हुए और इंफोटेनमेंट सिस्टम पर मेनू के माध्यम से शफल करते हुए। विमान और हेलीकॉप्टर उड़ाने के बाद, फेरारी का कॉकपिट काफी सरल लगना चाहिए! यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे तकनीक से प्यार था और वह इसे स्पंज की तरह अवशोषित करता था। मैं इंजन, सवारी और हैंडलिंग, इंटीरियर पैकेजिंग या कार के किसी भी पहलू के बारे में आसानी से बात कर सकता था।

टाटा के बारे में मेरी चिरस्थायी यादें वे हैं जो इस व्यक्ति को परिभाषित करती हैं, जैसे चेयरमैन के रूप में उनके आखिरी जिनेवा इंटरनेशनल मोटर शो का समय जब उन्हें तस्वीरों के लिए परेशान किया जा रहा था, लेकिन उन्होंने हाउसकीपिंग करने वाली महिला की मदद करना सुनिश्चित किया, जिसने कई सालों तक टाटा स्टॉल को साफ रखा था। या चेयरमैन के रूप में उनके साथ हमारे आखिरी साक्षात्कार का समय, जब एक निजी गली के अंत में उनके घर के बाहर कैमरे लगाए गए थे। वे सड़क के बीच में रखे गए तिपाई को देखकर भड़क गए। ₹क्या होगा अगर कोई कार आ जाए; आपका कैमरा उसे रोक देगा,₹ उन्होंने कहा, इस बात को लेकर चिंतित कि शायद कोई गाड़ी चलाना चाहे। उनका पहला सहज ज्ञान दूसरों को असुविधा न पहुँचाना था। अन्य शक्तिशाली लोगों के विपरीत जो पूरे मोहल्ले को असुविधा पहुँचाते हैं! और यही उस व्यक्ति की महानता थी। उन्हें अमीर और शक्तिशाली लोगों के साथ घुलना-मिलना पसंद नहीं था, लेकिन आम लोगों के साथ उन्हें सबसे अधिक सहजता थी। चाहे वह कर्मचारियों के प्रति दयालुता दिखाना हो या आवारा कुत्तों की देखभाल करना हो, रतन टाटा की विनम्रता और विचारशीलता उन्हें सबसे अलग बनाती थी। कई शक्तिशाली हस्तियों के विपरीत, उन्होंने कभी भी किसी पर दबाव डालने की कोशिश नहीं की, बल्कि हमेशा परवाह करने की कोशिश की, और यही उनकी महानता का सही मापदंड था। यही कारण है कि वे भारत के सबसे प्रिय उद्योगपति हैं, वह अच्छे व्यक्ति जिन्हें आप हमेशा जीतना चाहते थे। भगवान की कृपा हो, मेरे दोस्त! आपके बिना दुनिया एक अंधकारमय, गरीब जगह है।

एक्सिकॉम ने भारत में डीसी फास्ट चार्जिंग को बढ़ावा देने के लिए ट्रिटियम को 37 मिलियन डॉलर में खरीदा

परिवहन विशेष न्यूज

एक्सिकॉम ने यू.एस. स्थित डी.सी. फास्ट चार्जिंग तकनीक कंपनी ट्रिटियम को खरीदने के लिए 37 मिलियन यू.एस. डॉलर का भुगतान किया है। एक्सिकॉम के प्रबंध निदेशक अनंत नाहटा ने कहा कि कंपनी हैदराबाद में एक विनिर्माण सुविधा स्थापित कर रही है, जहाँ वह इलेक्ट्रिक कार समाधान प्रदान करने के लिए ट्रिटियम की डी.सी. (डायरेक्ट करंट) क्विक चार्जिंग तकनीक का लाभ उठाएगी।

नाहटा के अनुसार, यह लेन-देन व्यापक है और इसमें चार महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं: यूके, नीदरलैंड, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया। ट्रिटियम के पूरे 300 कर्मचारियों को एक्सिकॉम ने अपने में समाहित कर लिया है।

नैस्डैक-सूचीबद्ध इलेक्ट्रिक कार डीसी फास्ट चार्जर ट्रिटियम द्वारा इन-हाउस हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग करके बनाए गए हैं। नाहटा के अनुसार, ट्रिटियम चार्जर भारत के ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर की निर्भरता और प्रभावशीलता को बढ़ाएंगे और देश के कठोर मौसम के लिए एकदम सही हैं, जो -20 से 55 डिग्री सेल्सियस तक होता है।

नाहटा के अनुसार, बीपी पल्स, चार्जपॉइंट, ईवी कनेक्ट, ईवीसीएस और शेल रिचार्ज जैसी वैश्विक कंपनियां ट्रिटियम के ग्राहकों में शामिल हैं। एक्सिकॉम का दावा है कि ईवी पब्लिक चार्जिंग में इसकी 25 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी है और ईवी घरेलू चार्जिंग में इसकी 40 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी है। एमजी, टाटा, किआ मोटर्स, मर्सिडीज बेंज, जेबीएम, वोल्वो, महिंद्रा और हुंडई इसके कुछ वाहन भागीदार हैं।

नाहटा का दावा है कि एक्सिकॉम ने ट्रिटियम की टेनेसी साइट को प्रभावी रूप से खरीद लिया है। इस विकास के माध्यम से, वे ट्रिटियम के वैश्विक ज्ञान को स्थानीयकृत करते हुए अभिनव चार्जिंग समाधानों की बढ़ती ज़रूरत को बेहतर ढंग से पूरा करने में सक्षम होंगे। भारत में, एक्सिकॉम दो आरएंडडी सुविधाएँ और तीन उत्पादन सुविधाएँ चलाता है।

आनंद ग्रुप ने ईवी और एसयूवी घटकों के विकास के लिए ₹600 करोड़ का किया निवेश

परिवहन विशेष न्यूज

आनंद ग्रुप इस वित्तीय वर्ष में इलेक्ट्रिक वाहन और स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) के कलपुर्जे बनाने की अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए 600 करोड़ रुपये का निवेश कर रहा है। यह ऑटोमोटिव क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए पांच साल की अवधि में 3,600 करोड़ रुपये की बड़ी योजना का हिस्सा है।

एसयूवी घटकों में 35% बाजार हिस्सेदारी रखने वाला यह समूह, जबकि यात्री वाहन खंड में 23% हिस्सेदारी रखता है, ईवी और एसयूवी के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों के साथ अपने पोर्टफोलियो का विस्तार करने का लक्ष्य रखता है। आनंद समूह की सूचीबद्ध शाखा गैब्रियल इंडिया एसयूवी के लिए शॉक एब्जॉर्बर की आपूर्ति करने वाली प्रमुख कंपनी रही है, जबकि मंडो आनंद इंडिया इन वाहनों के लिए उच्च-स्तरीय इलेक्ट्रॉनिक पावर स्टीयरिंग और स्थिरता नियंत्रण प्रणाली प्रदान करती है।

दाना आनंद ड्राइव शाफ्ट और एक्सेल की मांग में भी वृद्धि देख रहा है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से एसयूवी में किया जाता है, जबकि महले आनंद थर्मल सिस्टम्स नई पीढ़ी के इलेक्ट्रिक एसयूवी और अन्य प्लेटफार्मों के लिए डिजाइन किए गए ई-कंप्रेसर और पीटीसी

हीटर की आपूर्ति करता है।

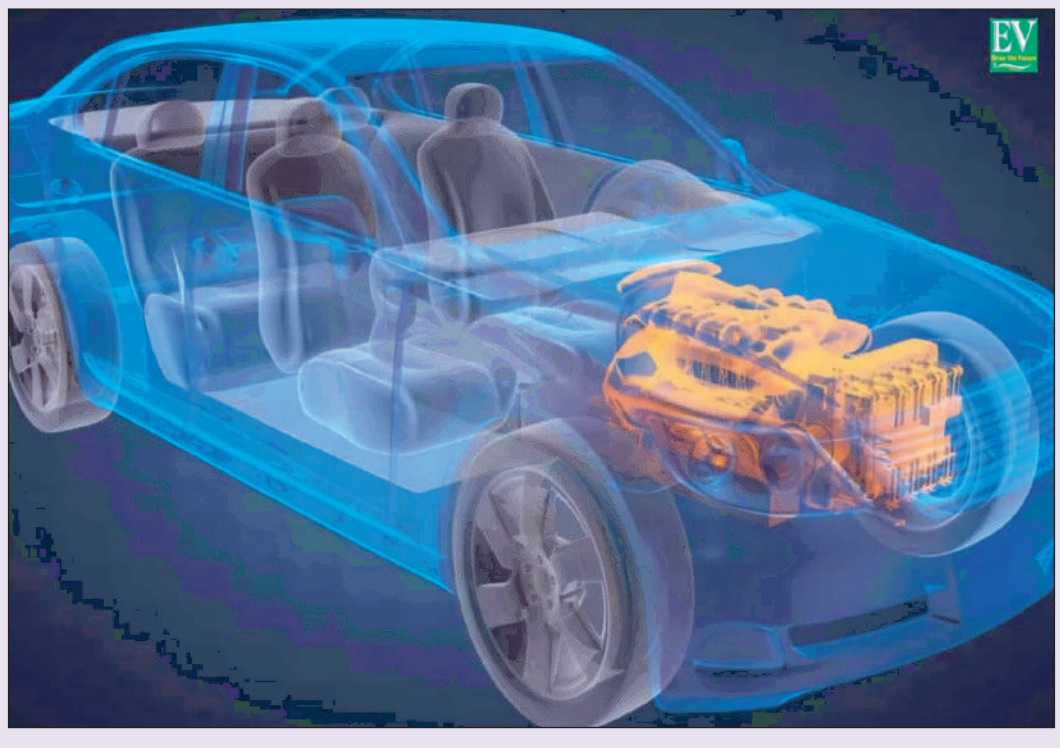

वर्तमान में, आनंद ग्रुप का 35% राजस्व एसयूवी घटकों से आता है, जो पांच साल पहले 20% था। इसके अतिरिक्त, इसका लगभग 6% राजस्व इलेक्ट्रिक वाहन भागों के निर्माण से उत्पन्न होता है, जो इलेक्ट्रिक चार पहिया और दो पहिया दोनों प्रकार के वाहनों के लिए है।

आनंद ग्रुप के सीईओ महेंद्र गोयल इलेक्ट्रिक कारों की मांग में स्थिरता के बावजूद ईवी सेगमेंट में वृद्धि को लेकर आशावादी हैं। उनका मानना है कि भारत में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन वृद्धि का नेतृत्व करेंगे।

वास्तविक के बरक्स आभासी दुनिया

विजय गर्ग

सोशल मीडिया पर रोजाना न जाने कितने वीडियो, चित्र और समाचार साझा किए जाते हैं सर्वेक्षण बताते हैं कि इस तरह के वीडियो और समाचार किशोरों और कम उम्र के बच्चों में आत्महत्या, हिंसा, यौन अपराध और संवेदनहीनता पैदा करने में अहम भूमिका निभाते हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के बाद समाज, संस्कृति और सोच में जिस तरह के बदलाव की आशंका जताई जा रही थी, वह अब सच साबित होता दिखाई दे रहा है। है। बीसवीं और इससे जुड़ी साइटों और नए-नए साफ्टवेयरों के इस्तेमाल तथा उसके असर पर तब बहुत कुछ ऐसा लिखा जा रहा था, जिस पर नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह दी जा रही थीं, लेकिन मोबाइल के ऐस नकारात्मक सदी के अंतिम दशक में मोबाइल, , इंटरनेट और की प्रतिक्रियाएं दी जा रही थीं, प्रभाव देखने को मिलेंगे, किसी ने सोचा न होगा। ₹समाजशास्त्रिया और शोध संस्थाओं के सर्वेक्षण बताते हैं कि पिछले तीन-चार दशक में भारतीय समाज, खासकर युवाओं में एक नकारात्मक प्रवृत्ति देखी जा रही है। बहुत सारे अवसाद का शिकार हो रहे हैं। उनमें चिड़चिड़ापन, अकेले रहने की प्रवृत्ति गहरी हो रही है। माता-पिता, आस- पड़ोस, रिश्तेदारों से उनका लगाव तेजी से कम हो रहा है। । पढ़ाई-लिखाई में भी रुचि तेजी से घट रही है। इसका सबसे बड़ा कारण मोबाइल पर भा ज्यादा से ज्यादा वक्त बिताना और जो कुछ देखा-सुना उसे हासिल करने के लिए हद से गुजर जाने की जाने की भावना का का लगातार बढ़ते जाना है।। जाना है। एक किशोर औसतन हर दिन दस घंटे और आठ से बारह वर्ष के बालक औसतन आठ घंटे मोबाइल के साथ गुजारते हैं आनलाइन मित्रता करना, परिवार [और समाज से हर समय कटे रहना तथा केवल मौज मस्ती करना उनकी जिंदगी का उनकी जिंदगी का मकसद हो गया है। इससे परिवार और समाज दोनों पर गहरा असर पड़ रहा है। मनोवैज्ञानिकों के 1 के मुताबिक सोश सोशल मीडिया का लगातार इस्तेमाल इसकी लत लग जाती है। जब मोबाइल पर कोई खेल रहा होता है या कोई काम पूरा कर रहा होता है, तो उसे जितना हो सके, बेहतर करने की कोशिश करता है। एक बार जब इसमें सफलता मिल जाती है तो यह धीरे-धीरे आदत में बदल जाती है। यह आदत फेसबुक, एक्स, टेलीग्राम और । जैसे तमाम सोशल मीडिया मंचों पर आठ-दस घंटे लगातार रहने से स्वभाव में बदल जाती है। सोशल मीडिया की लोग हिंसा, प्यार, नफरत, वेदना और का तमाम साइटों के जरिए विश्वासघात जैसी प्रवृत्तियों से गुजरने लगते हैं। आज मोबाइल स्क्रीन पर महज एक स्पर्श से सभी कुछ उपस्थित हो जाता है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक पचासी फीसद लोग संदेश भेजते हैं। इसी तरह चित्र साझा करने और उन्हें देखने में बयासी फीसद लोग शामिल होते हैं। मित्रों के साथ संपर्क में रहने के लिए अस्सी फीसद लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। वीडियो फिल्म और संगीत के लिए सोशल मीडिया का लगभग पचहत्तर फीसद लोग इस्तेमाल करते हैं। अपने निकटतम लोगों के संपर्क में बने रहने के लिए लगभग छिहत्तर फीसद लोग तो विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के लिए साठ फीसद से अधिक लोग इसका प्रयोग करते हैं। 'साइट एप्लीकेशन' लगभग पैंसठ फीसद लोग और जीवन साथी की जानकारी रखने के लिए पचास फीसद लोग प्रयोग करते हैं। पिछले दशकों में सोशल मीडिया के दुरुपयोग की वजह से कश्मीर, पूर्वोत्तर भारत, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और असम सहित तमाम कई इलाकों में दंगे-फसाद हुए हत्या, अपहरण, नफरत, यौन अपराध, बदले की भावना और स्वार्थ की अतिशय प्रवृत्तियों को बहुत बढ़ावा मिला ऐसा

नहीं कि सोशल मीडिया पर सब कुछ बुरा है, लेकिन मानव मन अच्छाइयों की तरफ न जाकर बुराइयों की ओर ही लपकता है। यही वजह है कि सोशल मीडिया पर फूहड़ सामग्री, वीडियो, आपत्तिजनक संवाद और भावना भड़काने वाले कार्यक्रमों के लेख और वीडियो कुछ ही मिनट में करोड़ों लोगों तक पहुंच जाते हैं। दरअसल, सोशल मीडिया अब महज सूचनाओं के आदान-प्रदान का मंच नहीं रह गया है। यह एक बड़ा कारोबार बन चुका है। इसलिए युवाओं को आकर्षित करने के लिए इसमें बहुत कुछ ऐसी सामग्री भी डाली जाने लगी है, जो युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से कतई उचित नहीं कही जा सकती। ऐसा भी नहीं कि सोशल मीडिया का असर केवल शहरी इलाकों पर दिखाई दे रहा है। इसने ग्रामीण इलाकों को भी अपनी चपेट में ले लिया है। गांव की सहजता, मौलिकता, आतिथ्य सत्कार, कृषि संस्कृति, लोक धर्म, लोक संवाद, लोक चर्चा, लोक साहित्य, लोक संवाद और लोक 5 धुनों की मीठी गूंज गुम होती जा रही है। गांवों के चौपालों पर जो महफिलें सजती थीं, उसको सोशल मीडिया ने अपने आगोश में समेट लिया है। गांवों का स्वस्थ मनोरंजन अब यू ट्यूब, फेसबुक और वाट्सऐप के आने के बाद कहीं गायब हो गए हैं। महज तीन दशक में सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को हर स्तर पर पतन की ओर धकेला है। और मूल्य परक साहित्य की संस्कृति, भाषा, स्वदेशी, शाकाहार, स्वावलंबन अहमियत सोशल मीडिया ने खत्म कर दी। सोशल मीडिया ने युवा पीढ़ी को एक तरह सम्मोहित कर लिया है। इससे उनमें भटकाव, नकारात्मकता, नफरत, बदले की भावना, कामुकता, अविश्वास, जीवन के प्रति लापरवाही, अच्छे कार्यों के प्रति अरुचि, संवदेनहीनता, , क्रूरता, बदपरहेजी, विकृत मनोरंजन, मानसिक तनाव, और विश्वासघात जैसी तमाम प्रवृत्तियां पैदा हुई हैं। मानवीय, पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में बिखराव पैदा करने में सोशल मीडिया की भूमिका से हम सब परिचित हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, विश्व समाज और प्रकृति की अज्ञात चीजों के बारे में जानने में सोशल मीडिया के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। हम इस बात से इनकार नहीं सकते है कि तमाम खामियों के बावजूद सोशल मीडिया शल मीडिया समाज, ज्ञान-विज्ञान,

की और अद्यतन को जानने समझने का सबसे बेहतर जरिया है। गांवों लोक संस्कृति, लोक भाषा, लोक साहित्य और लोक संगीत भले संकट में दिखते हों, लेकिन सोशल मीडिया ने इन्हें जीवंत और संरक्षित करने में बड़ी भूमिका निभाई है। विश्व स्तर पर आतंक, पलायन, सांप्रदायिकता, क्रूरता, भ्रष्टाचार, व्याभिचार आदि विकृतियों को पोषित कर सोशल मीडिया ने ऐसी कई समस्याओं और संकटों को जन्म दिया है, जिन्हें दो दशक पहले तक कोई नहीं जानता था इसी तरह अंधविश्वास, पाखंड और कुप्रथाओं को बढ़ाने में भी सोशल मीडिया योगदान कर रहा है। इससे व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों में कमजोरी आई सोशल मीडिया के अधिक इस्तेमाल से अनेक तरह के शारीरिक और मानसिक रोग असमय ही पैदा होने लगे हैं दूसरी ओर कई बीमारियों के बढ़ने की बड़ी वजह सोशल मीडिया की लत है। नई पीढ़ी अपना ज्यादातर वक्त मोबाइल के संग बिताने में अधिक मशगूल दिखाई पड़ती है। इससे उसकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्ति और हजता पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। मोबाइल भले जिंदगी का हिस्सा बन गया हो, पर इसने रातों की नींद और दिन का चैन छीनने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

वैज्ञानिकों ने आपके सपनों को रिकॉर्ड करने और प्लेबैक करने के लिए एक उपकरण का आविष्कार किया है

विजय गर्ग

जैसे-जैसे हम अपने सपनों को समझने के करीब आते हैं, रोमांचक तकनीक हमारे अवचेतन की खोज के लिए नई संभावनाएं विकसित करती है। यह सपनों के बारे में हमारे सोचने के तरीके और हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव को बदल सकता है।

(यह अभूतपूर्व नवाचार सपनों की रहस्यमय दुनिया का पता लगाने के लिए मस्तिष्क इमेजिंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में प्रगति को जोड़ता है)

क्योटो में एटीआर कम्प्यूटेशनल न्यूरोसाइंस प्रयोगशालाओं के शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया जिससे इस उपकरण का सफल निर्माण हुआ। प्रोफेसर युकियासु कामितानी के नेतृत्व में, टीम ने सपने देखने से संबंधित विस्तृत तंत्रिका गतिविधि को पकड़ने के लिए कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एफएमआरआई) का उपयोग किया।

सपनों का विश्लेषण कैसे किया जाता है?

नींद के शुरुआती चरणों के दौरान स्वयंसेवकों की संज्ञानात्मक गतिविधि की बारीकी से निगरानी की गई, और एक बार जब वे आरईएम नींद में प्रवेश कर गए, तो उन्हें जगाया गया और उनके द्वारा देखे गए सपनों के बारे में पूछा गया।

मस्तिष्क स्कैन के विश्लेषण और विशिष्ट मस्तिष्क पैटर्न से जुड़ी छवियों का एक विस्तृत डेटाबेस तैयार करने के माध्यम से, वैज्ञानिकों ने स्वप्न सामग्री की भविष्यवाणी में 60 प्रतिशत सटीकता हासिल की, जो विशिष्ट दृश्य वस्तुओं के लिए 70 प्रतिशत से अधिक तक बढ़ गई।

एटीआर कम्प्यूटेशनल न्यूरोसाइंस प्रयोगशालाओं के प्रोफेसर युकियासु कामितानी ने कहा, ₹हम नींद के दौरान मस्तिष्क की गतिविधि से स्वप्न की सामग्री को प्रकट करने में सक्षम थे, जो विषयों की मौखिक रिपोर्ट के अनुरूप था।₹

इस तकनीक में मस्तिष्क गतिविधि का उपयोग करके सपनों के कुछ पहलुओं को डिकोड करने की अपार क्षमता है।

इस उपकरण का महत्व आकर्षण से परे है, जो मानव मस्तिष्क, चेतना की प्रकृति और तंत्रिका वैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए सपने देखने के महत्व में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञानी डॉ. मार्क स्टोक्स ने कहा, ₹यह शोध एक रोमांचक अवसर प्रदान करता है जो हमें उन मशीनों के विचार के करीब लाता है जो सपनों को समझ सकती हैं।₹

इस नवोन्मेषी तकनीक में किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अधिक सटीक मूल्यांकन करने और मनोवैज्ञानिक विकारों के सटीक निदान में सहायता करके मानसिक स्वास्थ्य के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने की क्षमता है।

जबकि स्वप्न-रिकॉर्डिंग उपकरण महत्वपूर्ण रुचि रखता है, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि यह अभी भी अपने प्रारंभिक विकास चरण में है।

शोधकर्ता पुनर्निर्मित सपनों की स्पष्टता और सटीकता दोनों में सुधार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित होती है, सपनों की प्रकृति के साथ-साथ उनके साथ आने वाली भावनाओं, भावनाओं और अनुभवों में गहरी अंतर्दृष्टि को उजागर करने के लिए आशावाद है।

नए अवसरों के लिए जरूरी है 'अपस्किलिंग और रिस्किलिंग

विजय गर्ग

पारंपरिक मॉडल, जिसमें एक बार शिक्षा प्राप्त करने के बाद जीवन भर एक ही क्षेत्र में कॅरिअर बनाना होता था, अब पुराना हो चुका है। जैसे-जैसे उद्योग बदलते हैं, वैसे-वैसे सफल होने के लिए आवश्यक कौशल भी बदलते रहते हैं। प्रासंगिक बने रहने के लिए निरंतर सीखना आवश्यक है। सक्रिय रूप से अपस्किलिंग और रिस्किलिंग करके, आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके कौशल प्रासंगिक बने रहें । प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए, प्रोफेशनल्स को अपस्किलिंग और रिस्किलिंग की रणनीतियों को अपनाना चाहिए, जिनसे न केवल मौजूदा कौशल में वृद्धि होगी, बल्कि यह पेशेवरों को नए अवसरों के लिए भी तैयार करती है।

■ अपस्किलिंग और रिस्किलिंग अपस्किलिंग में नए कौशल सीखना या मौजूदा कौशल को बेहतर बनाना शामिल है, ताकि युवा अपनी वर्तमान भूमिका में प्रदर्शन और उत्पादकता को बढ़ा सकें। उदाहरण के लिए, एक डिजिटल मार्केटर उन्नत डाटा एनालिटिक्स में महारत हासिल कर सकता है। रिस्किलिंग, नए कौशल सीखने पर जोर देती है, जिससे आप किसी अन्य भूमिका या उद्योग में जा सकें। यह तब आवश्यक हो सकता है, जब आप अपने कॅरिअर को एक दिशा में ले जाना चाहें, जैसे कि एक मैन्युफैक्चरिंग वर्कर सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट सीखता है, ताकि वह तकनीकी क्षेत्र में जा सके।

■ स्किल गैप की पहचान करना प्रभावी ढंग से अपस्किलिंग या रिस्किलिंग करने के लिए, सबसे पहले आपके वर्तमान या इच्छित भूमिका में अपने स्किल गैप की पहचान करना महत्वपूर्ण है। उद्योग प्रवृत्तियों, नौकरी विवरणों और भविष्य के विकास क्षेत्रों का विश्लेषण करें। सलाहकारों या साथियों से फीडबैक भी उन क्षेत्रों को पहचानने में मदद कर सकता है, जिनमें सुधार करने की आवश्यकता है।

■ ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म

कोर्सेरा, उडेमी और लिंक्डइन लर्निंग जैसे ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म के उदय ने अपस्किलिंग और रिस्किलिंग को पहले से कहीं अधिक आसान और सुलभ बना दिया है। ये प्लेटफॉर्म विभिन्न क्षेत्रों में लचीले शिक्षण विकल्प प्रदान करते हैं। साथ ही मिलने वाले प्रमाणपत्र आपके रिज्यूमे को आकर्षक और प्रभावी बनाते हैं और विकास के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

■ नई टेक्नोलॉजी को अपनाना नई टेक्नोलॉजी को अपनाना और यह समझना महत्वपूर्ण है कि वे आपके उद्योग को कैसे

प्रभावित करती हैं । चाहे एआई हो, मशीन लर्निंग हो या ब्लॉकचेन हो, इन प्रौद्योगिकियों को जानना नए कॅरिअर पथ प्रतिस्पर्धात्मक को बढ़ावा देता है।

■ नेटवर्किंग और मेंटरशिप अपस्किलिंग और रिस्किलिंग की यात्रा में

विकास की मानसिकता प्रयास करने, सीखने और दृढ़ता के माध्यम से कौशल और बुद्धिमत्ता के जरिये विकसित की जा सकती है। यह अपस्किलिंग और रीस्किलिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चुनौतियों को सीखने के अवसरों के रूप में देखना निरंतर सुधार को प्रोत्साहित करता है और आपको नई परिस्थितियों के अनुकूल आसानी से ढलने की अनुमति देता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सोशल मीडिया के कारण रिश्तों में आ रही दरार

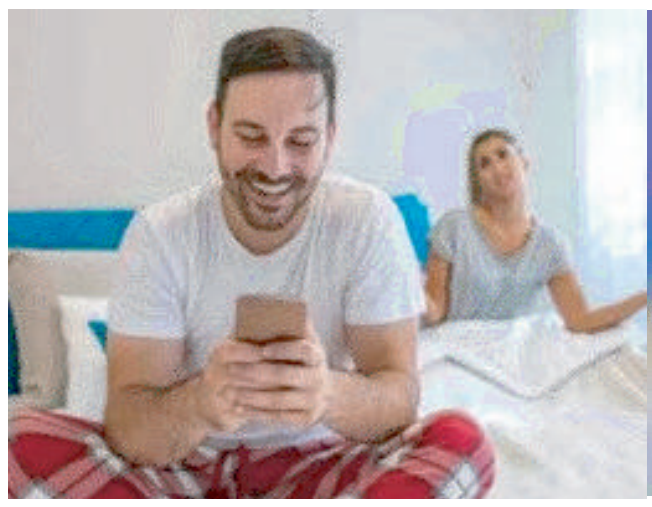

विजय गर्ग

देखा जाए तो सोशल मीडिया पर पिछले साल सवा साल से चल रहे ट्रेंड से आपसी संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा हैं वहीं सोशल मीडिया से जुड़ें लोगों में नकारात्मकता और डिप्रेशन का प्रमुख कारण बनता जा रहा है।

आपसी संबंधों में दरार का नया कारण सोशल मीडिया का नया चलन बनता जा रहा है। सोशल मीडिया पर कुछ समय से फ्लैगिंग का नया ट्रैंड चल पड़ा है। पहली बात तो यह कि लोगों का सोशल मीडिया पर रुझान तेजी से बढ़ा है और कोढ़ में खाज यह कि सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया का दौर भी तेजी से चल पड़ा है। मजे की बात यह कि सोशल मीडिया पर रिएक्शन नहीं आना भी डिप्रेशन का कारण बन रहा है तो सोशल मीडिया पर किसी भी तरह का रिएक्शन भी तनाव का कारण बनती जा रही है। इन दिनों फ्लैगिंग का नया दौर चल पड़ा है पर इसमें भी अधिक तो यह कि बेज फ्लैगिंग का नया ट्रेंड साथी को अधिक प्रताड़ित करने लगा है। प्रताड़ना का मतलब तनाव का प्रमुख कारण होने से हैं।

देखा जाए तो सोशल मीडिया पर पिछले साल सवा साल से चल रहे ट्रेंड से आपसी संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा हैं वहीं सोशल मीडिया से जुड़ें लोगों में नकारात्मकता और डिप्रेशन का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। नए ट्रेंड को भले ही सोशल मीडिया के उपयोगकर्ता गंभीरता से नहीं ले रहे हो पर जिस किसी पर नए ट्रेंड के अनुसार फ्लैगिंग के माध्यम से कमेंट्स किये जा रहे हैं उसका असर अंदर तक पहुच रहा है। दर असल पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया में इशारों-इशारों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का नया चलन तेजी से चला है। एक और जहां इमोजी का प्रयोग आम है तो फ्लैगिंग का नया चलन उससे भी अधिक गंभीर है। सोशल मीडिया पर इन दिनों बेज फ्लैग का चलन कुछ ज्यादा ही चला है। बेज फ्लैग का सीधा सीधा मतलब यह निकाला जा रहा है कि इस तरह का व्यवहार जो ना तो अच्छा है और ना ही बुरा, लेकिन इस तरह की प्रतिक्रिया संबंधित को सोचने को मजबूर कर देती है। खासतौर से इसका चलन आपसी रिश्तों को लेकर किया जा रहा हैं और इससे संबंधित में एक तरह की हीन भावना आती है और उसका दुष्परिणाम हम सब जानते ही हैं। इससे पहले साथियों को रेड फ्लैग और ग्रीन फ्लैग का लेबल दिया जाता रहा है। हांलाकि यह भी नकारात्मक ही है। रेड फ्लैग जहां समस्या से ग्रसित व्यवहार को दर्शाता है तो ग्रीन फ्लैग को अच्छे व्यवहार के रुप में देखा जाता रहा है। यानी कि आप अपने साथी को लेबल दे रहे हैं और वह लेबल ही साथी का आपके प्रति और आपका साथी के प्रति व्यवहार को दर्शाता है।

हालाकि यह नए नए ट्रेंड सोशल मीडिया पर अपने फालोअर्स बढ़ाने और इंफ्लूएंसर मार्केटिंग के किये जाते हैं पर इनका असर काफी गहरा देखा जा रहा है। सोशल मीडिया पर साइबर बूलिंग आम होती जा रही है। साइबर बूलिंग में ड़राने धमकाने के मैसेजों के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से टार्चर किया जाता है। संबंधित व्यक्ति अपने आत्म सम्मान पर ठेस समझता है और इसके कारण अत्यधिक सेंसेटिव व्यक्ति तो तनाव में चला जाता है। इससे उसकी दिनचर्या बुरी तरह से प्रभावित होने लगती है। देखा जाए तो सोशल मीडिया आपसी जुड़ाव का माध्यम होना चाहिए पर जिस तरह का ट्रेंड चल रहा है वह जुड़ाव के स्थान पर विलगाव का अधिक कारण बन रहा है। जाने अनजाने में सामने वाले को गहरी ठेस लगती है।

भले ही हमारी प्रतिक्रिया मजाक में हो रही हो पर सोशल मीडिया पर हमारी प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रियाओं का सिलसिला किस दिशा और हद तक चल निकले इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए हमें सामने वाले की भावनाओं का भी ध्यान रखना होगा। अन्यथा और कुछ नहीं तो संबंधों में अलगाव तो तय ही है। ऐसे में सोशल मीडिया को हमें सकारात्मक दिशा में ले जाना होगा। अनपेक्षित प्रतिक्रियाओं से बचना होगा। सोशल मीडिया दरअसल समय काटने या दूसरे को बुली करने का माध्यम नहीं है और ना ही होना चाहिए। बल्कि होना तो यह चाहिए कि सोशल मीडिया के माध्यम से सकारात्मकता का विस्तार और मोटिवेशन का माध्यम बनना चाहिए ताकि सामाजिक सरोकारों को मजबूती प्रदान की जा सके। इस भाग-दौड़, ईर्ष्या व प्रतिस्पर्धा की जिंदगी में लोगों को निराशा व तनाव से बाहर लाया जा सके। हमारी प्रतिक्रिया किसी को मोटिवेट करने का माध्यम बने तभी प्रतिक्रिया की सार्थकता है। ऐसे में सोशल मीडिया में नित नए प्रयोग करते समय कुछ अधिक ही गंभीर होना होगा। खासतौर से समाज विज्ञानियों और मनोविश्लेषकों को गंभीरता से ध्यान देना ही होगा।

विजय गर्ग

व्यक्तिगत शिक्षार्थी को समझें

अस्तित्ववाद, 19वीं शताब्दी का एक दर्शन है, जो आदर्शवाद, तर्कवाद, व्यावहारिकता, निरपेक्षता आदि जैसे पारंपरिक दर्शन की एक प्रकार की प्रतिक्रिया है। अस्तित्ववाद को इसलिए विशेष रूप से एक प्रकार के दार्शनिक आंदोलन के रूप में दर्शाया जाता है। मुख्य अग्रदूतों में सोरेन कीर्केगार्ड, जीन पॉल सात्रे, मार्टिन हिडगर, नीत्शे आदि हैं। जबकि पारंपरिक दार्शनिक विचारों ने पदार्थ और मानव के सार के बारे में अनुमान लगाया, अस्तित्ववाद ने सार के बजाय मानव अस्तित्व पर जोर दिया। यहां इस विचारधारा में अस्तित्व केंद्रीय विषय और सार है, बल्कि प्रकृति गौण है। जबकि पारंपरिक विचार प्रणाली चीजों की प्रकृति पर अधिक चिंतित थी, इस प्रकार मनुष्य के अस्तित्व को छोड़ दिया गया। एक व्यक्ति के रूप में मनुष्य भीड़, जटिल समाजों और विकसित शहरों में खो गया था। उसकी इच्छाओं और इच्छा की पसंद को समाज और अधिकारियों द्वारा परिभाषित किया जाता है, जबकि उसकी आंतरिक स्वतंत्रता और पसंद को बहुत दूर माना जाता है, बल्कि उसे भटका दिया जाता है। उनके विचार की स्वतंत्रता को कम कर दिया गया है और सत्ता और समाज की सीमाओं के अंदर स्थापित कर दिया गया है, जिसे अस्तित्ववाद के चश्मे से मनमाना माना जाता है। व्यक्तिगत समस्याओं को कोई प्रमुखता नहीं दी जाती। इसी पृष्ठभूमि में अस्तित्ववादियों द्वारा व्यक्तिगत विकल्पों और स्वतंत्रता की हानि को प्रमुखता दी गई है। अस्तित्ववादियों के अनुसार, मनुष्य को अपनी पसंद और इच्छा को परिभाषित करना चाहिए, उसे अपनी पसंद को कम करने और अधिकार द्वारा स्वतंत्रता की गिरफ्तारी के लिए अंदर से रोना नहीं चाहिए जो अर्थहीन और बेतुका है। अस्तित्ववादियों के अनुसार मनुष्य को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए स्वयं से संघर्ष करना चाहिए जिसे किसी तीसरे पक्ष द्वारा समाप्त नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि, इस विचार के अनुसार, मनुष्य मूलतः अकेला है, जबकि रिश्तों का जाल उसकी पसंद को निर्धारित और परिभाषित नहीं कर सकता है। मनुष्य को अधिक मानवीय बनने का प्रयास करना होगा, इस प्रकार व्यक्ति को स्वयं को समझने, स्वयं का एहसास करने और आत्म-बोध की ओर बढ़ने के लिए संघर्ष करना होगा। इस प्रकार मनुष्य को अपने प्रयासों और संघर्ष से प्रगति और मानवता के रूप में विकसित होना होगा। जबकि शिक्षा मानव संसाधन को अधिक मानवीय बनाने, दूसरे शब्दों में शिक्षित करने और सर्वांगीण विकास करने के लिए है। एक समृद्ध और उत्कृष्ट वातावरण देकर निष्क्रिय पड़ी सभी बौद्धिक क्षमताओं को बाहर लाना। आधुनिक शिक्षा प्रणाली रचनात्मकता को बढ़ावा नहीं देती बल्कि रटने को अधिक महत्व देती है। इस प्रकार की शिक्षा जो किसी व्यक्ति की रचनात्मकता को नियंत्रित करती है वह खतरनाक है और अस्तित्ववाद के अनुसार लाभ की तुलना में अधिक नुकसान पैदा करती है। किसी व्यक्ति में रचनात्मक विचारों का पनपना अस्तित्ववाद की अनिवार्य शर्त है। अस्तित्ववाद व्यक्तिगत क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, इस प्रकार विविध सोच और अवधारणाओं के लिए रचनात्मक विचारों का मार्ग प्रशस्त करता है, जो व्यक्तिगत स्वयं और सामूहिक भलाई के लिए उपयोगी होते हैं। लेकिन औपचारिक से अनौपचारिक तक का रास्ता तय करने वाली समकालीन शिक्षा प्रणाली को अस्पष्ट, अशक्त और निरर्थक, याद रखने और रटने के बिना माना जाता है। छात्रों की व्यक्तिगत पसंद और इच्छा को बेतुका और अनदेखा माना जाता है, बल्कि इसे एकल प्रणाली द्वारा डिज़ाइन किया जाता है और एक पक्ष द्वारा निर्णय लिया जाता है, चाहे वह माता-पिता हों, या शिक्षक। व्यक्तिगत विकल्प और पीछे चले जाएंगे, जबकि सामूहिक निर्णय आगे बढ़ते हैं और व्यक्ति की भूमिका और पसंद को परिभाषित करते हैं, जिससे स्वयं से लेकर समाज तक संघर्ष और अराजकता होती है और हिंसा में परिणत होता है, चाहे वह आत्महत्या हो या स्वयं की हत्या।

समकालीन समाजों में, छात्रों को नौकरी पाने के लिए माता-पिता द्वारा एक निर्धारित स्ट्रीम सीखने के लिए मजबूर किया जाता है, जो सीखने वाले की पसंद और इच्छा के अभाव में किया जाता है, जिससे अराजकता पैदा होती है।इसी तरह स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में भी व्यक्तिगत पसंद को विश्वास में नहीं लिया जाता है। शिक्षकों को शिक्षार्थी की पसंद, उसकी स्वतंत्रता और इच्छा की सीमा को जानना, समझना और उसके साथ संवाद करना होगा, उसके बाद मार्गदर्शन प्रदान करना होगा और उसे उसकी क्षमता से वास्तविकता तक ले जाना होगा; यह अस्तित्ववादी दार्शनिक विचार का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके अलावा, वर्तमान समय में निजी ट्यूशन और स्कूलों द्वारा शिक्षा का व्यावसायीकरण किया गया है, जो केवल एक निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तथ्यों के संचय पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इस प्रकार शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत गुणों और क्षमताओं को समझने को शैक्षिक प्रणाली में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

नोट छापकर गरीबी दूर क्यों नहीं कर सकती सरकार, कहां आती है दिक्कत?

परिवहन विशेष न्यूज

नोट छापना सरकार का काम है। ऐसे में सवाल उठता है कि वह एकसाथ ढेर सारे नोट छापकर लोगों की गरीबी क्यों नहीं दूर कर देती है। यह सवाल हर किसी के मन में कभी न कभी जरूर उठा होगा। कुछ देशों ने नोट छापकर विदेशी कर्ज उतारने और गरीबी दूर करने जैसी कोशिश भी की। लेकिन उनका हाल देखकर फिर किसी की हिम्मत नहीं हुई।

नई दिल्ली। जब पैसे छापना सरकार का ही काम है, तो वह एकसाथ ढेर सारे नोट छापकर लोगों की गरीबी क्यों नहीं दूर कर देती। कई लोग आपसी बातचीत में अक्सर यह बात कहते नजर आते हैं। आपके मन में भी यह बात कभी न कभी जरूर आई होगी।

लेकिन, यह कहने में जितना आसान है, करने में उतना ही मुश्किल। तकरीबन नामुमकिन ही कह सकते हैं। इससे लंबी अवधि में फायदा तो कुछ नहीं होगा, अलबत्ता महंगाई जैसी दूसरी कई परेशानियां अलग से बढ़ जाएंगी। गरीबों की जिंदगी पहले से कहीं अधिक बदहाल भी हो सकती है।

नोट छापकर परेशानी क्यों नहीं दूर करतीं सरकारें?

कोई भी देश अपनी आर्थिक मुश्किलें दूर करने के लिए अमूमन वर्ल्ड बैंक या फिर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसी संस्थाओं से कर्ज लेता है, जबकि उसके पास जितने मर्जी नोट छापने की सहूलियत होती है। इसकी सबसे ताजा मिसाल पाकिस्तान है। वहां आर्थिक संकट चरम पर है, लेकिन पाकिस्तानी हुकूमत ज्यादा नोट छापने के बजाय IMF से कर्ज पाने के लिए उसकी कड़ी से कड़ी शर्तें मानने को तैयार है।

इसकी वजह बड़ी साफ है। फर्ज कीजिए कि आप एक गांव में रहते हैं। वहां सब्जीवाला आलू 20 रुपये और टमाटर 30 रुपये किलो जैसी तर्कसंगत कीमतों पर बेचता है। फिर सरकार गरीबी दूर करने के लिए बहुत ज्यादा नोट छापकर उस गांव में सबको 1-1 करोड़ रुपये बांट देती है। अब सब्जीवाले के पास भी 1 करोड़ रुपये हैं, तो वह 20 रुपये किलो आलू और 30 किलो टमाटर क्यों बेचेगा?

इस सूरतेहाल में दो चीजें होंगी। पहली तो सब्जीवाला सब्जी बेचना बंद करके खुद ठाठ से रहने की कोशिश करेगा। दूसरा, वह सब्जियों के दाम बढ़ा देगा, ताकि उसे अपनी हैसियत के अनुसार मुनाफा हो और वह दूसरों से आगे बढ़े। सब्जीवाला 20 रुपये किलो आलू का दाम 2 हजार रुपये किलो भी कर सकता है। इसी तरह से दूध या किराना वाले भी अपनी चीजों के दाम बढ़ा देंगे। और समस्या पहले से ज्यादा बढ़ जाएगी।

वेनेजुएला और जिम्बाब्वे हैं इसकी मिसाल

दक्षिण अमेरिकी देश वेनेजुएला और अफ्रीकी मुल्क जिम्बाब्वे ने नोट छापकर कर्ज उतारने और गरीबी दूर करने की कोशिश की थी, लेकिन दोनों ही देश अपना हाथ जला बैठे। जब जनता के हाथ में बेहिसाब पैसा पहुंचा, तो उन्होंने जमकर खरीदारी भी शुरू कर दी। जब सप्लाई से अधिक डिमांड होने लगी, तो चीजों के दाम भी आसमान छूने लगे।

कभी अपनी अमीरी के लिए मशहूर वेनेजुएला की पहचान उसकी अनियंत्रित महंगाई बन गई। वेनेजुएला में आज भी पेट्रोल पानी से सस्ता है, लेकिन वहां एक पैकेट ब्रेड की कीमत भी लाखों डॉलर में पहुंच गई थी। कई गरीब या तो भूखे पेट सो रहे थे, या फिर कचरे में से जूठा खाना खा रहे थे। लाखों लोगों ने बेहतर जिंदगी की तलाश में वहां से पलायन भी कर लिया था।

जिम्बाब्वे का हाल भी इससे कम बुरा नहीं था। वहां तो महंगाई दर करीब 25 करोड़ फीसदी तक बढ़ गई थी। सरकार ने मुद्रास्फीति के आधिकारिक आंकड़े तक जारी करना बंद कर दिया था। एक सरकारी बैंक ने एटीएम से पैसे निकालने पर डेटा ओवरफ्लो एरर दिखाया, क्योंकि उसमें सिस्टम की हद से ज्यादा जीरो हो गए थे। आखिर में जिम्बाब्वे को दूसरे देशों की करेंसी को अपनाना पड़ा।

ज्यादा करेंसी छापने के नुकसान क्या हैं?

अगर कोई भी देश अधिक करेंसी छापता है, तो उससे महंगाई तो बढ़ती ही है, उसकी करेंसी का मूल्य भी घट जाता है। वेनेजुएला के पास दुनिया का सबसे बड़ा कच्चे तेल का भंडार है, लेकिन उसने अंधाधुंध नोट छापकर अपनी यह हालत कर ली थी कि एक अमेरिकी डॉलर की बराबरी के लिए 2.5 करोड़ वेनेजुएला डॉलर खर्च करने पड़े थे। अब अगर भारत तय मानक से अधिक नोट छापकर जनता में बांट देता है, तो उसकी सॉवरेन रेटिंग पर बुरा असर पड़ेगा। सॉवरेन रेटिंग को आप देशों का सिबिल स्कोर समझ सकते हैं।

अगर सॉवरेन रेटिंग ज्यादा खराब हो जाएगी, तो वही दिक्कत होगी, जो सिबिल स्कोर खराब होने पर होती है। मतलब वर्ल्ड बैंक और दूसरी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से कर्ज मिलना मुश्किल हो जाएगा। और अगर मिलेगा भी, तो ब्याज काफी ज्यादा देना पड़ेगा। इसका मतलब कि देश कभी न निकलने वाले कर्ज के जाल में फंस जाएगा।

यही वजह है कि देश अपनी जीडीपी के अनुपात में नोट छापते हैं। यह अनुपात आमतौर पर जीडीपी का 1 से 2 प्रतिशत तक होता है। कई बार देश नोट छापने के लिए राजकोषीय स्थिति और विकास दर को भी पैमाना बनाते हैं। इससे देश में महंगाई स्थिर रहती है। साथ ही, करेंसी का एक्सचेंज रेट भी एकाएक हद से ज्यादा नहीं गिरता, जैसा कि वेनेजुएला और जिम्बाब्वे के मामले में हुआ था।

हुंडई समेत तीन आईपीओ मार्केट में एंट्री को तैयार, चेक कीजिए पूरी डिटेल

सोमवार से शुरू हो रहे हफ्ते में तीन नए आईपीओ खुलने वाले हैं। इनमें से 1 मेनबोर्ड और दो एसएमई सेगमेंट में होंगे। इनमें हुंडई मोटर इंडिया का आईपीओ भी रहेगा जो एलआईसी का रिकॉर्ड तोड़कर देश का सबसे बड़ा आईपीओ बनेगा। अपकमिंग मेनबोर्ड और एसएमआई पब्लिक ऑफरिंग के जरिए 27995 करोड़ रुपये जुटाएंगे। इसमें एसएमई सेगमेंट वाले दोनों इश्यू का कुल साइज 125 करोड़ है।

नई दिल्ली। आईपीओ मार्केट में सोमवार (14 अक्टूबर) से शुरू हो रहे नए हफ्ते में काफी सरगर्मी देखने को मिलेगी। हालांकि, इस दौरान सिर्फ तीन ही आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे। लेकिन, इनमें हुंडई मोटर इंडिया का आईपीओ भी रहेगा, जो देश का सबसे बड़ा आईपीओ होना वाला है। बाकी दो आईपीओ SME सेगमेंट के रहेंगे।

अपकमिंग मेनबोर्ड और एसएमआई पब्लिक ऑफरिंग के जरिए 27,995 करोड़ रुपये जुटाएंगे। इसमें एसएमई सेगमेंट वाले दोनों इश्यू का कुल साइज 125 करोड़ है। आइए जानते हैं तीनों आईपीओ की डिटेल।

हुंडई मोटर इंडिया आईपीओ डिटेल

हुंडई मोटर (Hyundai Motor India IPO) मंगलवार यानी 15 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। आईपीओ का साइज 27,870.16 करोड़ है और यह देश में अब तक सबसे बड़ा आईपीओ होगा। इसका प्राइस बैंड 1865 से 1960 रुपये प्रति शेयर तय किया है। एक लॉट में 7 शेयर रहेंगे। इसका मतलब कि रिटेल इन्वेस्टर्स को अपर प्राइस बैंड के हिसाब से कम से कम 13,720 रुपये का निवेश करना पड़ेगा।

इस इश्यू में एंप्लॉयीज कोटा भी होगा और हुंडई के निवेशकों को 186 रुपये डिस्काउंट पर आईपीओ सब्सक्राइब करने का मौका मिलेगा। शेयरों का अलॉटमेंट 18 अक्टूबर को होगा। वहीं, हुंडई की BSE और NSE पर लिस्टिंग 22 अक्टूबर को हो सकती है।

गोल्ड लोन लेने जा रहे हैं, तो इन बातों का रखें ध्यान, बाद में नहीं होगी कोई परेशानी

कई बार हमें बच्चों की पढ़ाई शादी या घर बनवाने जैसे खर्चों के लिए गोल्ड लोन की जरूरत पड़ जाती है। लेकिन गोल्ड लोन लेने से पहले इसके नफा-नुकसान के बारे में अच्छे से जान लेना चाहिए ताकि आपको अपने सोने की पूरी वैल्यू मिले। साथ ही आपको ब्याज या रीपेमेंट के समय किसी तरह का नुकसान ना हो। आइए गोल्ड लोन के बारे में सबकुछ जानते हैं

नई दिल्ली। गोल्ड ऐसी धातु है, जिसकी हमेशा दुनियाभर में अपनी एक अलग अहमियत रही है। इसके आभूषण पहनने का शौक आम महिलाओं से लेकर राजा महाराजों तक रहा। लेकिन, इसकी सबसे अहम भूमिका रही मौद्रिक प्रणाली में।

आज भी किसी देश की आर्थिक ताकत का अंदाजा इस बात से लगता है कि उसके पास कितना गोल्ड भंडार है। कभी-कभी तो सरकारें सोना गिरवी रखकर कर्ज भी लेती हैं। आम लोग भी अक्सर गोल्ड लोन लेते हैं।

ऐसे में हम आपको बता रहे हैं कि गोल्ड लोन कैसे लिया जाता है, इसे कहां से लेना लिया जाता है और गोल्ड लोने लेते वक्त किन बातों का ख्याल रखना चाहिए।

किन कामों के लिए लेना चाहिए लोन?

आप बच्चों की पढ़ाई, शादी या फिर इमरजेंसी में मेडिकल खर्च जैसे कामों के लिए गोल्ड ले सकते हैं। इसे दूसरे अन्य लोन की तुलना में ज्यादा सुरक्षित माना जाता है। लेकिन, गोल्ड लोन लेना तभी सही होता है, जब कुछ वक्त के लिए ही पैसों की दरकार हो।

घर या जमीन खरीदने जैसे बड़े खर्च के लिए गोल्ड लोन का इस्तेमाल करने से जोखिमों पर पहले अच्छे से सोच विचार कर लेना चाहिए।

बैंक से लोन लें या NBFC से?

यह चीज आपकी सहूलियत पर निर्भर करती है। बैंक में कम ब्याज दर पर गोल्ड लोन मिल जाता है। वहीं, नॉन-बैंकिंग फाइनेंस कंपनियां (NBFC) ब्याज ज्यादा लेती हैं, लेकिन कर्ज की रकम भी ज्यादा देते हैं।

NBFC का मुख्य धंधा ही सोने के बदले कर्ज देना होता है, इसलिए वहां गोल्ड लोन जल्दी अप्रूव भी हो जाता है। हालांकि, आपके कर्ज लेने से अलग-अलग बैंकों और NBFC में ब्याज दर पता कर लेनी चाहिए।

गोल्ड लोन की अच्छी बात है कि यह अनसिक्योर्ड लोन जैसे पर्सनल लोन, प्रॉपर्टी लोन, कॉर्पोरेट लोन की तुलना में सस्ता पड़ता है।

एक्स्ट्रा चार्जेज पर भी गौर करें

गोल्ड लोन में भी दूसरे आम लोन की तरह प्रोसेसिंग फीस लगती है, जो बैंकों और NBFC के हिसाब से अलग-अलग होती है। कुछ वित्तीय संस्थान इसमें रियायत भी देते हैं। प्रोसेसिंग फीस पर GST भी लगता है।

कुछ बैंक वित्तीय संस्थान वैल्यूएशन फीस भी लेते हैं, जिसकी शुरुआत 250 रुपये से होती है। सर्विस चार्ज, SMS चार्ज और सिक्योर्ड कस्टडी फीस जैसे कुछ अन्य खर्चे भी होते हैं।

री-पेमेंट में कौन-सा ऑप्शन चुनें?

कर्ज देने वाले संस्थान आपको कर्ज की रकम और ब्याज का भुगतान (रीपेमेंट) करने के लिए ढेरों विकल्प देते हैं। अगर आप नौकरीपेशा हैं और आपके पास हर महीने पैसे आते हैं, तो EMI में पेमेंट कर सकते हैं। आपके पास एकमुश्त मूल भुगतान के साथ ब्याज भरने का विकल्प भी रहता है।

बैंक अमूमन 3 महीने से 3 साल तक के लिए गोल्ड लोन देते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आपके कितने समय के लिए कर्ज चाहिए या फिर आप उसे कितने समय में लौटा सकते हैं।

कैसे गोल्ड के बदलने मिलता है लोन?

सोने के बदले कर्ज लेने की पहली शर्त है कि जिस गोल्ड को आप गिरवी रख रहे हैं, वो कम से कम 18 कैरेट शुद्ध होना चाहिए। बैंक या NBFC गहनों और सोने के सिक्कों के बदले ही लोन देते हैं। आप 50 ग्राम से ज्यादा वजन के सोने के सिक्के गिरवी नहीं रख सकते। वित्तीय संस्थान गोल्ड बार को भी गिरवी नहीं रखते।

लोन पर डिफॉल्ट कर गए तो?

यहां भी कर्ज वाला सामान्य नियम लागू होता है, अगर आप समय कर्ज नहीं चुका पाते, तो वित्तीय संस्थान को आपका सोना बेचने का हक है। साथ ही, अगर सोने का भाव गिरता है, तो आपसे अतिरिक्त सोना गिरवी रखने के लिए भी कहा जा सकता है।

हैल्थ इंश्योरेंस के क्या फायदे हैं, पॉलिसी लेने से पहले किन बातों का रखना चाहिए ध्यान?

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हमारा लाइफस्टाइल बीमारियों के साथ अटूट नाता हो गया है। ऐसे में हेल्थ इंश्योरेंस की अहमियत काफी ज्यादा बढ़ गई है। यह परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है और हम बिना किसी आर्थिक तनाव के अपना बेस्ट इलाज करा पाते हैं। आइए जानते हैं हेल्थ इंश्योरेंस के सभी फायदे और इसे लेने से पहले ध्यान रखने वाली बातें।

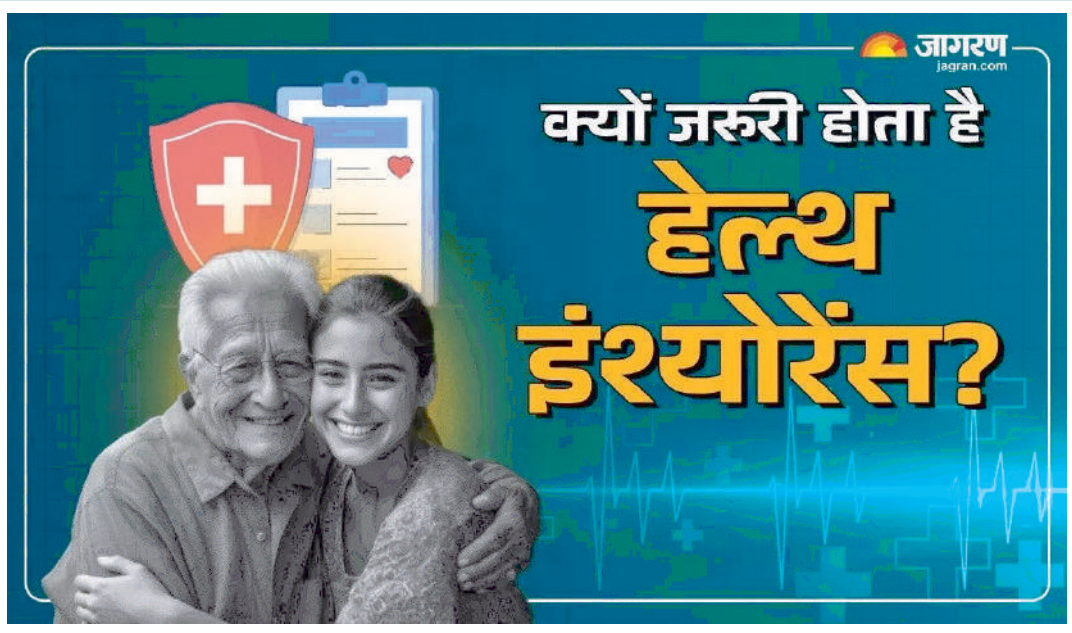

नई दिल्ली। भारत में गरीबी की एक बड़ी वजह बीमारियों पर होने वाला खर्च है। यहां मिडल क्लास फैमिली तक के बारे में कहा जाता है कि वे गरीब होने से बस एक बीमारी दूर हैं। इस जोखिम को कम करने के लिए हेल्थ इंश्योरेंस लेना एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

हालांकि, आज भी जागरूकता के अभाव में लोग मेडिक्लेम या हेल्थ इंश्योरेंस को पैसे की बर्बादी मानते हैं। लेकिन, किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना के वक्त आपको इस अहमियत पता चलती है। आइए जानते हैं कि हेल्थ इंश्योरेंस लेना क्यों जरूरी है, इसे लेने के क्या फायदे हैं और बीमा कराते वक्त किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

हेल्थ इंश्योरेंस जरूरी क्यों?

केंद्रीय स्वास्थ्य विभाग का डेटा बताता है कि 80 फीसदी मेडिकल इमरजेंसी में पैसों की दिक्कत के चलते मरीज की हालत बिगड़ जाती है। अस्पताल से छुट्टी के बाद भी दवाओं पर खर्च जारी रहता है। कई बार इलाज में भारी खर्च के चलते लोग गहने, जमीन और घर तक बेचने को मजबूर हो जाते हैं। कर्ज के जाल में भी फंस जाते हैं, जो ताउम्र उनका पीछा नहीं छोड़ता। हेल्थ इंश्योरेंस आपको इन सभी परेशानियों से बचा सकता है।

हेल्थ इंश्योरेंस के फायदे

हेल्थ इंश्योरेंस का सबसे बड़ा फायदा है कि आप बिना किसी आर्थिक तनाव के अपना बेहतर तरीके से इलाज कर सकते हैं। आपको अपनी बचत और घरेलू खर्चों से कोई समझौता नहीं करना पड़ेगा। न ही आपको किसी के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा। गहने या फिर जमीन-जायदाद बेचने की नौबत भी नहीं आएगी। इंश्योरेंस में अस्पताल में भर्ती होने का खर्च, सर्जरी, दवाएं, डॉक्टर की फीस जैसी चीजें कवर होती हैं। कैशलेस इलाज की सुविधा मिलती है। टैक्स छूट का लाभ भी मिलता है।

हेल्थ इंश्योरेंस लेने से पहले किन बातों का रखें ध्यान?

हेल्थ इंश्योरेंस में आपको कवरेज रकम का सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिए।

इंश्योरेंस प्रीमियम की दर और भुगतान की शर्तों को सावधानी से पढ़ना चाहिए।

कवर की जाने वाली चीजों का ध्यान रखें, जैसे कि सर्जरी, दवाएं, अस्पताल की फीस।

नेटवर्क अस्पतालों की सूची भी देखें, जहां आप कैशलेस इलाज करा सकते हैं।

आपको पहले से कोई बीमारी है, तो पॉलिसी में इसके लिए कवरेज का ध्यान रखें।

वेटिंग पीरियड का ध्यान रखें, जिसमें कुछ बीमारियों के लिए कवरेज नहीं मिलता है।

अपनी पॉलिसी की समीक्षा करते रहें और जरूरत के हिसाब से बदलाव भी करें।

क्यों रिजेक्ट होता है इंश्योरेंस क्लेम?

- इंश्योरेंस लेते समय अधूरी या गलत जानकारी देना।
- क्लेम वाले कारण का पॉलिसी में शामिल न होना।
- फोटो, पुलिस रिपोर्ट जैसे डॉक्युमेंटेशन का न होना।
- तय समयसीमा के भीतर इंश्योरेंस क्लेम न करना।
- क्लेम का पॉलिसी कवरेज लिमिट से अधिक होना।

"रावण के संस्कार और सोशल मीडिया: एक आधुनिक परिप्रेक्ष्य" : संस्कारशाला

रावण, अपनी अपार विद्वता, शक्ति, और संस्कारों के लिए जाना जाता है। उसके दस सिर प्रतीक हैं कि वह हर प्रकार के ज्ञान, शक्ति और क्षमता से संपन्न था। चाहे वह वेदों का ज्ञान हो, युद्ध की कला, संगीत, तंत्र-मंत्र या राजनीति, रावण ने हर क्षेत्र में महारत हासिल की थी। लेकिन इसके बावजूद, वह अपने अहंकार, अतृप्त इच्छाओं और असंयम के कारण विनाश की ओर अग्रसर हुआ।

आज के आधुनिक युग में, रावण की यह कहानी सोशल मीडिया की स्थिति के साथ काफी मेल खाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे रावण के पास सभी संस्कार और शक्तियां थीं, आज के समय में सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है, जहाँ हर प्रकार की जानकारी, क्षमता, और साधन मौजूद हैं। लेकिन इसका सही उपयोग न करने पर, यह भी हमें रावण की तरह विनाश की ओर ले जा सकता है।

1. अत्यधिक सूचना और ज्ञान

सोशल मीडिया आज के समय का सबसे बड़ा सूचना स्रोत है। जैसे रावण के पास हर प्रकार का ज्ञान था, वैसे ही सोशल मीडिया के माध्यम से हम हर विषय पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन अगर हम उस जानकारी का दुरुपयोग करते हैं, तो उसका परिणाम हानिकारक हो सकता है। जानकारी का गलत उपयोग या अधूरी जानकारी साझा करना हमें गलत दिशा में ले जा सकता है, जैसे रावण अपने अहंकार के कारण सही मार्ग से भटक गया था।

2. अहंकार और दिखावे का मंच

रावण की सबसे बड़ी कमजोरी उसका अहंकार था। वह अपनी शक्ति और ज्ञान पर इतना गर्व करता था कि उसने सही और गलत की सीमाएं लांघ दीं। आज के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म भी कई बार लोगों को दिखावे और अहंकार के जाल में फंसा देते हैं। लोग अपने जीवन के हर पहलू को प्रदर्शित करने में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि वे अपनी वास्तविकता से

दूर हो जाते हैं। सोशल मीडिया पर लाइक्स और फॉलोअर्स की संख्या का मापदंड किसी की सफलता का मानक नहीं हो सकता, यह केवल दिखावे का खेल है, जो हमें असली जीवन के मूल्यों से दूर कर सकता है।

3. संस्कारों की भरमार, पर उपयोग की कमी

जैसे रावण में हर प्रकार के संस्कार मौजूद थे, वैसे ही सोशल मीडिया पर हर प्रकार की संस्कृति, विचारधारा, और संस्कारों का संग्रह है। लेकिन इन संस्कारों और जानकारी का सही उपयोग न होने पर, यह हमें गलत दिशा में ले जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए हम अच्छे विचारों, सकारात्मक बदलावों और समाज सुधार की दिशा में काम कर सकते हैं, लेकिन अगर हम इसका गलत इस्तेमाल करते हैं, तो यह समाज को विभाजित करने, नफरत फैलाने और गलत सूचनाओं के प्रसार का माध्यम बन सकता है।

4. संयम और नियंत्रण की आवश्यकता

रावण का जीवन यह सिखाता है कि कितनी भी शक्ति और ज्ञान होने पर, अगर उनमें संयम और नियंत्रण नहीं है, तो वे विनाश का कारण बन सकते हैं। आज के सोशल मीडिया युग में भी संयम की बहुत आवश्यकता है। हमें यह सीखना चाहिए कि कब, क्या और कितना साझा करना है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग और बिना सोचे-समझे जानकारी साझा करना हमारे मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक ताने-बाने के लिए हानिकारक हो सकता है।

5. सही और गलत का भेद

रावण, अपने संस्कारों के बावजूद, सही और गलत का भेद नहीं कर पाया। उसने सीता का अपहरण किया, जो उसके विनाश का कारण बना। सोशल मीडिया पर भी आज हमें सही और गलत के भेद को समझना आवश्यक है। किसी भी विषय पर प्रतिक्रिया देने से पहले, हमें उस विषय की सत्यता और उसके प्रभाव को समझना चाहिए।

रावण का जीवन और आज का सोशल मीडिया हमें एक महत्वपूर्ण सीख देते हैं – चाहे हमारे पास कितनी भी जानकारी, शक्ति या साधन हों, अगर हम उसका सही उपयोग नहीं करते और संयम नहीं रखते, तो उसका परिणाम विनाशकारी हो सकता है। सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है जो हमें समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर देता है, लेकिन इसके लिए हमें अपनी सोच, विचारधारा और कार्यों में संतुलन और संयम बनाए रखना होगा। रावण की तरह हमें अपने ज्ञान और शक्ति का दुरुपयोग करने से बचना चाहिए और सही दिशा में उसका उपयोग करना चाहिए, तभी हम वास्तविक प्रगति कर सकते हैं।

संस्कारशाला: रावण के दस सिर की मान्यता

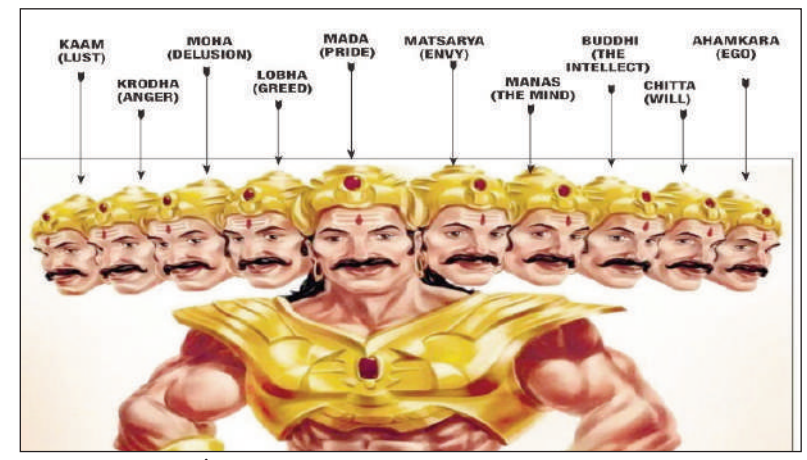

- अंकुर

रावण, रामायण के प्रमुख पात्रों में से एक, अपने दस सिरों के लिए प्रसिद्ध है।

भारतीय पौराणिक कथाओं में रावण का यह रूप प्रतीकात्मक और दार्शनिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। रावण के दस सिर केवल शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, शक्ति और अहंकार के विभिन्न रूपों का प्रतीक हैं।

दस सिरों की प्रतीकात्मकता: रावण के दस सिर उसकी दस तरह की खूबियों और कमजोरियों का प्रतीक हैं। यह माना जाता है कि वह वेद, शास्त्र, संगीत, विज्ञान, कला, युद्ध, तंत्र-मंत्र, राजनीति, नीति और कूटनीति में निपुण था। लेकिन इन सभी ज्ञानों के बावजूद, अहंकार ने उसे विनाश की ओर धकेल दिया। उसके सिर इस बात का प्रतीक हैं कि अगर हम ज्ञान को विनम्रता के साथ नहीं अपनाते, तो वह हमें विनाश की ओर ले जा सकता है।

दस विकार: कुछ मान्यताओं के अनुसार, रावण के दस सिर दस मानव विकारों का भी प्रतीक हैं, जैसे काम (वासना), क्रोध, मोह, लोभ, मद (अहंकार), मत्सर (ईर्ष्या), आलस्य, क्रूरता, अज्ञानता और अहंकार। ये सभी विकार रावण के अंदर थे, जिन्होंने उसे महान होते हुए भी पतन की ओर धकेल दिया।

ज्ञान का घमंड: रावण अत्यधिक विद्वान था, लेकिन उसका घमंड और अपनी शक्तियों का दुरुपयोग उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी। यह हमें सिखाता है कि चाहे हम कितने भी शक्तिशाली और ज्ञानी क्यों न हों, अगर हमारे अंदर विनम्रता और सहनशीलता नहीं है, तो वह ज्ञान विनाश का कारण बन सकता है।

मानव मन के विभिन्न पहलू: रावण के दस सिर यह भी दर्शाते हैं कि मानव मन में अनेक विचार और भावनाएं एक साथ चलती हैं। किसी भी व्यक्ति को अपने मन को संतुलित और संयमित रखना चाहिए, ताकि उसके भीतर की नकारात्मक भावनाएं उसे हानि न पहुंचाएं।

रावण के दस सिर हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में ज्ञान, शक्ति और सफलता का सही उपयोग तभी संभव है जब हम अहंकार और नकारात्मकता से मुक्त हों। संस्कारशाला के इस पाठ के माध्यम से बच्चों को यह समझाने की कोशिश है कि चाहे हमारे पास कितनी भी शक्ति या ज्ञान हो, विनम्रता और सही मार्ग पर चलने का महत्व सबसे अधिक है। रावण के दस सिर उसकी महानता के साथ-साथ उसकी त्रुटियों को भी उजागर करते हैं, जो हमें सही दिशा में जीवन जीने का संदेश देते हैं।

अपील - समाज में प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाए रखें : मुशरफ खान

आगरा, संजय साग़र सिंह। भारत त्योहारों का देश है, और हर त्यौहार हमें इंसानियत, भलाई, भाईचारा, एकता और सबको मिलजुलकर रहने का महत्वपूर्ण सन्देश देता हैं, जिन्हें समाज के हर वर्ग के लोग बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं। यही हमारी भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा है, और हमारी गंगा-जमुनी तहज़ीब, जो कि देश की पहचान है, उसे हर हाल में बनाए रखें और आगामी त्योहारों पर आपसी सौहार्द, भाईचारा, शांति-सद्भावना बनाएं रखें। कृपया अफवाहों से बचें, सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट करने से पहले सावधान रहें और ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे किसी भी व्यक्ति या समुदाय को परेशानी हो। उल्लास-उमंग के त्यौहारी माहौल में आपसी भाईचारा बना रहे। इसलिए त्यौहार को एकजुटता और आपसी सम्मान के साथ मिलकर मनाएं और समाज में प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाए रखे। ये बातें कहते हुए वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने गंगा जमुनी तहजीब के प्रवाहक सभी देश वासियों से आपसी प्रेम, सौहार्द व भाईचारे के साथ आगामी पर्वो को मनाने की अपील की।

नवरात्र के अवसर पर आगामी दशहरा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज और छठ पर्व की सभी देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने सभी से अनुरोध किया कि-हर बार की तरह वह इस बार भी सौहार्दपूर्ण वातावरण में मिलजुल कर सौहार्दपूर्ण तरीके से उल्लास-उमंग के साथ साथ त्यौहार मनाएं और मिसाल कायम करें। हमारे सीएम योगी महाराजजी, शासन और प्रशासन की मंशा है कि शांति और सद्भाव के साथ बिना किसी परेशानी के सभी लोग मिलजुलकर त्यौहार बनाएं ताकि शांति के माहौल में जनपद, प्रदेश और देश विकास के पथ पर अग्रसर रहें। इसलिए हमारी सभी से अपील हैं कि त्योहारों पर ऐसा कोई कार्य ना किया जाएं जिससे किसी की स्वतंत्रता को आघात ना किया जाएं तथा त्योहारों के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखें। हम सब में भाईचारे की भावना प्रगाढ़ में बृद्धि हो। शहर की फिजा किसी प्रकार से दूषित ना हो। इन सभी बातों का विशेष ध्यान हम सभी त्योहारों के दौरान रखें और आम जनमानस को संदेश दिया जाए कि त्योहारों के अवसर पर एक दूसरे की भावनाओं का आदर करते हुए त्यौहार मनाए और जनपद में एक संदेश प्रसारित हो के त्योहारों के अवसर पर कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिल सके।

उन्होंने आगे कहा, आगामी पर्व-त्योहारों के अवसर पर उल्लास और उमंग का यह समय शांति और सौहार्द पूर्ण माहौल में बोते, और त्यौहारी माहौल में आपसी भाईचारा बना रहे। सभी लोग आपसी भाईचारे, सद्भाव, हर्षोल्लास के साथ मिल जुलकर आगामी त्योहारों को मनाये और आगामी त्योहारों पर एक दूसरे की भावनाओं का आदर करते हुए ग़रीब, असहायों का ख्याल रखे और ज़रूरतमंदों में त्योहारों की खुशियाँ बांटकर सभी प्रेमपूर्वक त्यौहार मनाए, जिससे असहाय गरीब परिवार भी त्योहारों की ख़ुशियों में हम सब के साथ शरीक़ हो सके। यही हमारी भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा है।

कटक-भुवनेश्वर ट्विन सिटी में शारदीय पूजा का बजट 600 करोड़

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

कटक, भुवनेस्वर: मां जगतजननी की पूजा के लिए पूजा समितियां करोड़ों नहीं तो सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च कर रही हैं। ऐसा लगता है कि कटक और भुवनेश्वर के बीच महंगी पूजा आयोजित करने की होड़ मची हुई है। आपको जानकर हैरानी होगी कि दोनों शहरों में शारदीय पूजा का बजट सैकड़ों करोड़ से ज्यादा हो गया है। तो क्यों, शारदीय दुर्गा पूजा महंगी है।आकर्षक पूजा से बजट बढ़ रहा है। हर साल सोने और चांदी की भेड़ों की संख्या बढ़ती जा रही है, और जहां कहानी तोरण द्वारा बताई जा रही है।

रौप्यनगरी कटक, सोने और चांदी की भेड़ों के लिए प्रसिद्धि पा चुके कटक शहर में इस साल सोने और चांदी की भेड़ों की संख्या 34 तक पहुंच गई है। और इसमें मां जगतजननी की एक के बाद एक सोने और चांदी की चमकती मूर्तियां हैं। कटक शहर का पहला चंडीमेधा 1956 में चौधरी बाजार में आयोजित किया गया था। वहां सबसे पहले लगभग 4 क्विंटल चांदी की ढलाई की गई। बाद में मां को सोने के आभूषण पहनाए गए। ऐसे में इस बार मां की प्रतिमा को 40 किलो सोने के गहनों से सजाया गया है। समिति ने कहा कि भविष्य में सोने में पूरी बढ़ोतरी होगी।

आंकड़ों के मुताबिक, कटक में पूजा का बजट पिछले साल की तुलना में इस साल 30 फीसदी बढ़ गया है। पिछली बार कटक में 32 स्वर्ण और रजत पदक थे। इस बार यह 34 तक पहुंच गया है। इस वर्ष, तुत्सीपुर और रामगढ़ कनिका स्ट्रीट समितियां शामिल हुई हैं, इसलिए शहर में कुल 176 भेड़ों का वध किया गया है।पिछले साल करीब 250 करोड़ रुपये खर्च हुए थे। इस बार यह करीब 325 करोड़ तक पहुंच गया है। ऐसा लग रहा है जैसे पूजा को आकर्षक बनाने की होड़ मच गई है।

कटक में मेढ को महत्व दिया जाता है, जबकि भुवनेश्वर में तोरण को प्राथमिकता दी जाती है। इसका मतलब यह है कि राजधानी में हर साल की तरह मेढ की बजाय तोरण पर फोकस है. पुराना स्टेशन बाजार, नुआपल्ली, शहीदनगर, लाडगढ़, झारपाड़ा, लक्ष्मी सागर और गंगानगर पूजा मंडप आकर्षक हैं। सिर्फ शहीदनगर पूजा कमेटी ने इस बार एक करोड़ रुपये रोके हैं, जबकि तोरण पर ही 40 से 45 लाख रुपये खर्च किये हैं। इसी तरह पुराना स्टेशन बाजार पूजा समिति का बजट 80 लाख है। इस प्रकार, भुवनेश्वर में कुल 187 भेड़ें बनाई गईं, जिनमें 6 सोने और चांदी की भेड़ें शामिल थीं। पिछले साल की तुलना में राजधानी में पूजा का बजट 25 फीसदी बढ़कर करीब साढ़े तीन सौ करोड़ तक पहुंच गया है।

मर्यादा पुरषोत्तम क़ी महिमा से मुमकिन हैं पानी में, पानी से, पानी पर श्री राम लिखना : डॉ उमेश शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा.विप्र एकता मंच

विजयादशमी के पावन पर्व पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

आगरा, संजय साग़र सिंह। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन भारतीय संस्कृति और धर्म में आदर्श पुरुष के रूप में सम्मानित किया जाता है। श्री राम को धर्म, सत्य, और मर्यादा के पालनकर्ता के रूप में जाना जाता है, इसलिए उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है और 'रामराज्य' काल शांति, न्याय और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन सत्य, कर्तव्य और मर्यादा की मिसाल है।

प्रभु, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र की मर्यादाओं के मार्ग का वर्णन करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी एवं अ.भा.विप्र एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष-डॉ उमेश शर्मा ने कहा, मर्यादा पुरुषोत्तम क़ी महिमा से पानी में पानी पर पानी से श्री राम लिखना भी मुमकिन हैं।श्रीराम एक ऐसा पथ है, जिस पर राम ही सदा चले, उनके जैसा मर्यादा पुरुषोत्तम सृष्टि में ना कोई हुआ है और ना कभी होगा। इसलिए प्रभु के चित्र की पूजा के साथ-साथ उनके चरित्र का अनुसरण करना चाहिए तभी हमारा जीवन सुखमय होगा। प्रभु, श्रीराम के जीवन की मर्यादाएं हमें आदर्श जीवन जीने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करती हैं।

उन्होंने कहा, रामायण के महानायक प्रभु श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है, जो धर्म, कर्तव्य और आदर्श जीवन के प्रतीक माने जाते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र त्याग, कर्तव्यपालन, निष्ठा, सहनशीलता-

संयम, सच्चाई-न्याय, समानता-करुणा, परिवार-रिश्तों की महत्ता, स्वार्थ रहित कुशल नेतृत्व का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्रभु, निश्चित रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम है, उन्होंने सदैव ही मर्यादा में रहकर हर कार्य किया और न्याय, सत्य और धर्म के पथ पर आजीवन चलते रहे एवं सामान्य पुरुष की भांति जीवन के हर संघर्षों को अपनाया और मानव के रूप में आकर प्रभु ने सभी जनमानस का कल्याण किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन एक आदर्श व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों का प्रतीक है, जिससे हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं। प्रभु श्रीराम ने पिता के वचन को निभाने के लिए राजसुख और राज्य का त्याग कर 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कर्तव्य और वचन पालन जीवन में सर्वोपरि होना चाहिए। उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोया, चाहे वह वनवास हो, या माता सीता का हरण हो, वे हमेशा चट्टान की तरह संयमित और शांत रहे। इससे हमें जीवन में संयम और धैर्य रखने की प्रेरणा मिलती है। श्रीराम ने अपने सम्पूर्ण जीवन में सत्य और न्याय का पालन किया। उन्होंने रावण जैसे अत्याचारी का वध कर धर्म की स्थापना की। इससे हमें यह सीखने को मिलता है कि सत्य की हमेशा विजय होती है और न्याय करना जीवन का एक आवश्यक मूल्य है।

श्री शर्मा ने कहा, प्रभु राम ने मनुष्य रूप में मित्र, भाई, पुत्र, पति और माता-पिता हर नाते का सम्मान कर पूरी दुनियां को मर्यादा के मार्ग पर चलने का पाठ पढ़ाया। लेकिन वर्तमान समय में मित्र-मित्र न होकर शत्रु अधिक है, इस संदर्भ में भी भगवान श्रीराम ने मित्रता का उदहारण मानव जाति को दिया है। मित्र के रूप में, प्रभु श्री राम के चरित्र का वर्णन शब्दो द्वारा संभव नहीं है। उनके दास हनुमानजी से उनकी मित्रता उच्चकोटि की मित्रता का स्थान पाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कभी भी जाति के नाम पर भेद-भाव नही किया। वे सभी मनुष्यों को समान समझते थे। उनकी नजर में कोई छोटा या बड़ा नहीं था। इसका उदहारण भी रामायण में प्राप्त होता है। श्रीराम ने अपने मित्र निषाद राज गुहा का सम्मान किया उन्हें अपने कंठ से लगाया, केवट की भक्ति पर तो वे बलिहारी हो गए और जो तृप्ति उन्हें वनवासी माँ सबरी के झूठे बेर खाकर हुई वो तृप्ति उन्हें अवध और मिथिला के छत्तीस व्यजनों में भी प्राप्त नहीं हई। प्रभु श्रीराम ने विभीषण और वनवासी सुग्रीव जैसे साधारण व्यक्तियों से मित्रता कर समानता और करुणा का संदेश दिया। इससे हमें सिखने को मिलता है कि सभी का सम्मान करना चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

उन्होंने आगे कहा, स्वयं भगवन श्रीराम ने भी विषम परिस्थिति में धैर्य का सहारा लेकर आदर्श प्रस्तुत किया था। इसके लिए शास्त्रों में भगवान श्रीराम को आदर्श पुरुष कहा गया है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अपने भाइयों, पत्नी, और माता-पिता के प्रति प्रेम और निष्ठा हमें बताता है कि परिवार और रिश्तों का जीवन में बड़ा महत्व है। उन्होंने हमेशा अपने प्रजा के हित को प्राथमिकता दी। अयोध्या लौटने पर उन्होंने 'राम राज्य' की स्थापना की, जो न्याय, समानता और खुशहाली का प्रतीक हैं। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि एक सच्चे नायक को निःस्वार्थ और परोपकारी होना चाहिए। श्री राम के जीवन के मर्यादाओं की ये शिक्षाएँ हमें एक आदर्श जीवन जीने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रभु श्रीराम की पूजा-अर्चना करने से हर सनातनी को धैर्य का वरदान प्राप्त होता है। इससे व्यक्ति के जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दुख और संकट समय के साथ दूर हो जाते हैं। इसलिए प्रभु के चित्र की पूजा के साथ-साथ उनके चरित्र का अनुसरण करना चाहिए तभी हमारा जीवन सुखमय होगा।
विजयादशमी के पावन पर्व पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं!

धोखाधड़ी करने के लिए आरोपी प्रिन्स बैंड के प्रॉपराइटर धंडू और बृजेश की अग्रिम ज़मानत ख़ारिज

अभियुक्तगण के जमानत प्रार्थना पत्र का एडवोकेट अरविन्द पुष्कर द्वारा विरोध में प्रस्तुत किये गए महत्वपूर्ण तर्क, उभय पक्ष को सुनने के उपरान्त न्यायालय ने अभियुक्तगण का अग्रिम जमानत की ख़ारिज

आगरा, संजय साग़र सिंह। जिला एवं सत्र न्यायालय दीवानी कचहरी में माननीय सत्र न्यायालय ने वादी के अधिवक्ता के द्वारा विरोध में प्रस्तुत किये गए महत्वपूर्ण तर्कों को सुनने के उपरांत सत्र न्यायाधीश महोदय ने अभियुक्तगण का अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र ख़ारिज कर दिया।

एडवोकेट प्रदीप कुमार के साथ धोखाधड़ी करने के लिए आरोपी धंडू और बृजेश की अग्रिम जमानत सत्र न्यायाधीश ने खारिज कर दी गयी हैं। पूर्व में एडवोकेट प्रदीप कुमार ने अपनी शादी में शाहगंज स्थित प्रिन्स बेंड को 25 हज़ार रूपये में बुक किया था, लेकिन प्रॉपराइटर धंडू और ब्रजेश चौधरी पूरा पैसा लेने के बाद भी एडवोकेट प्रदीप कुमार की शादी में बैंड लेकर नहीं आएं।

इस सन्दर्भ में वरिष्ठ अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर द्वारा एडवोकेट प्रदीप कुमार की तरफ से 156(3) का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर अभियुक्त धंधू तथा बृजेश चौधरी के विरुद्ध मुकद्दमा पंजीकृत कराया। तत्पश्चात अभियुक्तगन द्वारा अग्रिम जमानत जिला एवं सत्र न्यायालय में दायर की गयी। अभियुक्तगन के जमानत प्रार्थना पत्र का एडवोकेट अरविन्द पुष्कर द्वारा विरोध में महत्वपूर्ण तर्क प्रस्तुत किये गए और उभय पक्ष को सुनने के उपरान्त सत्र न्यायालय ने अभियुक्तगण प्रिन्स बैंड के प्रॉपराइटर धंडू और बृजेश चौधरी का अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र ख़ारिज कर दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023